



Chhattisgarh
TRTI
TRIBAL RESEARCH AND
TRAINING INSTITUTE



दंतेवाड़ा जिले का **घोटपाल मंड़ई**

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़







दंतेवाड़ा जिले का घोटपाल मंडळ

निर्देशन

शम्मी आबिदी आई.ए.एस.
संचालक

मार्गदर्शन

डॉ. रूपेन्द्र कवि

अध्ययन एवं लेखन

डॉ. राजेन्द्र सिंह

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
नवा रायपुर अठल नगर, छत्तीसगढ़





प्रावक्षण

छत्तीसगढ़ राज्य की जनजातियों के धार्मिक व सांस्कृतिक जीवन में अनेक समृद्ध विरासत के दर्शन होते हैं। उनमें प्रकृति, पूर्वज, गोत्र देव व अलौकिक धार्मिक शक्तियों के प्रति गहन आस्था व समर्पण भावना पाया जाता है। वे आदिकाल से अपने आराध्य की नियत तिथि, अंतराल व अवसर पर पूजा, अर्चना व अर्पण कर कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। "करसाड़" बस्तर के जनजातियों में गोत्र देव का विशेष सामूहिक आराधना पर्व है। इसमें दैवीय व सांसारिक नातेदारों की सहभागिता सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है अर्थात् इसमें मुख्य देव के नातेदार देवी-देवता व समुदाय के सदस्यों के नातेदारों की सहभागिता होती है। निश्चित पूजा विधान, आगाध श्रृद्धा से परिपूर्ण यह पर्व सामाजिक एकता व बंधुत्व की भावना को मजबूत करता है। जनजातीय समाज की यह अनोखी धार्मिक परंपरा समाज व संस्कृति की मौलिकता, अक्षुण्णता व निरंतरता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

दंतेवाड़ा जिले का "घोटपाल मंडई" क्षेत्र की प्रथम मंडई है। इसे स्थानीय जन 'घोटुम करसाड़' के नाम से जानते हैं। यह गोत्र देव उसेंड मुयतोर या उसेंडी तादो पेन की आराधना का महान वार्षिक पर्व है। "घोटपाल मंडई" पर आधारित इस अध्ययन कार्य में सहयोग प्रदान करने हेतु श्री बलीराम नेताम, श्री रामलाल नेताम, श्री कारोटी लेकाम, उसेंडी तादो मंदिर समिति के समस्त पदाधिकारीण व सदस्यगण, जिला प्रशासन, दंतेवाड़ा तथा सहयोगी समस्त गणमान्य नागरिकों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।

मुझे विश्वास है "दंतेवाड़ा जिले का घोटपाल मंडई" विषय पर आधारित यह प्रकाशन पाठकों, विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं के लिये उपयोगी सिद्ध होगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.....

शम्मी आबिदी (आई.ए.एस.)

संचालक

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
रायपुर (छ.ग.)

विषय सूची

क्र.	विवरण	पृष्ठ क्रमांक
1.	परिचय	5-9
2.	क्षेत्र एवं निवासी	10
3.	इतिहास	11-13
4.	माड़िया जनजाति	14-19
5.	घोटपाल मंड़ई	20-43
	अ. ढोल जगरानी	
	ब. गादी रिकानी	
	स. निमंत्रण	
	द. पेन अनाल सेवा अर्जी	
	इ. देवी-देवताओं का आगमन	
	फ. पेन करसाड़ या घोटपाल मंड़ई	
	ग. देवी देवताओं की विदाई	
	ह. सिंगार उतारनी	
6.	व्यवस्था एवं संचालन	44-48
7.	निष्कर्ष	49-56

खंडों का
दंतेवाड़ा जिले का

परिचय



भारत देश (2011 जनगणना) की जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत भाग जनजातीय जनसंख्या का है। भारत के अनेक राज्यों में जनजातीय संकेन्द्रण क्षेत्र में उनकी बहुआयामी संस्कृति के दर्शन होते हैं। प्राकृतिक परिवेश में निवासरत इन जनजातियों की जीवन शैली, रहन-सहन, सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में अनेक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के दर्शन होते हैं। जनजातीय समाज में समुदाय के प्रति निर्भरता तथा प्रकृति, पूर्वज व अलौकिक शक्तियों के प्रति समर्पण का भाव पाया जाता है। स्वयं, परिवार तथा समुदाय की सुरक्षा, उन्नति व प्रगति हेतु यह मानव समुदाय आदिकाल से अलौकिक शक्तियों, पूर्वज देवों, गोत्र देव व प्रकृति की पूजा आराधना करता आया है तथा अपने हितों की रक्षा व मनोवांछित परिणाम प्राप्ति पर आराध्य देवी-देवताओं की नियत समय पर या वार्षिक, द्विवार्षिक या त्रि वार्षिक पूजा अर्चना व अर्पण कर कृतज्ञता ज्ञापित करता है। इस दौरान के समुदाय के सदस्य सामूहिक रूप से विशेष वाद्य यंत्रों, आराधना गीत के माध्यम से देवी-देवता को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं। पूजन उपरांत सामुहिक नृत्य-गीत के माध्यम से मनोरंजन किया जाता है। धीरे-धीरे इन आयोजनों में अन्य क्षेत्र के अन्य समुदाय के सदस्य, विभिन्न व्यवसाय के लोग भी जुड़ने लगे व इन आयोजनों का स्वरूप व्यापक होता गया। इस प्रकार इन आयोजनों को जातरा, वार्षिक बाजार, मेला, मंडई आदि संज्ञाओं से संबोधन किया जाने लगा। यह धार्मिक-सामाजिक- आर्थिक सांस्कृतिक आयोजन इतने महत्वपूर्ण हो गये कि पूरे वर्ष इनका इंतजार होने लगा। जनजातीय क्षेत्रों में श्रृंखलाबद्ध रूप से ऐसे आयोजन होते हैं जिसमें न सिर्फ जनजातीय सदस्य वरन् उनके देवी-देवता भी सम्मिलित होते हैं व आयोजन को पूर्णता प्रदान करते हैं।

जनजातीय क्षेत्रों में आयोजित होने वाले वार्षिक बाजार, मेला-मंडई समाज में नवीन उर्जा का संचार करता है। अपने अनूठेपन के कारण अनेक मेला-मंडई की ख्याति देश-विदेश तक फैल गयी है। जिसमें सम्मिलित होने अनेक सैलानी, शोधार्थी, दर्शक सदैव उत्सुक रहते हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य का दक्षिणी भाग बस्तर क्षेत्र जनजातीय क्षेत्र के रूप में ख्याति प्राप्त है। प्राचीन काल से जनजातीय संस्कृति के अवलोकन, अध्ययन, पर्यटन, जिज्ञासा पूर्ति आदि उद्देश्य से दुनिया भर के लोग बस्तर प्रवास करते रहे हैं। बस्तर की जनजातियों के धार्मिक-आर्थिक-सांस्कृतिक जीवन में मेले-मंडई विशिष्ट स्थान रखते हैं।

जातरा, मेला, बाजार, मंडई/मङ्डई-

बस्तर क्षेत्र के प्रत्येक ग्राम में ग्राम गुड़ी में ग्राम देवी-देवता को स्थापित किया गया है। इन देवी-देवता के वार्षिक या द्वि-वार्षिक या त्रि वार्षिक विशेष पूजा किया जाता है, जिसे स्थानीय रूप में 'जातरा' या 'मंडई/मङ्डई' कहा जाता है। यह बाजार दो दिनों से एक सप्ताह तक की अवधि तक चलते हैं। इसमें ग्राम देवी-देवता की विशेष पूजा किया जाता है तथा मनौती अर्पित किया जाता है। परगना या आसपास के ग्रामों के देवी-देवताओं को आमंत्रित किया जाता है। जात्रा पूजा में ग्राम देवी-देवता की विशेष पूजा, जूलूस, बलि तथा बाजार का आयोजन किया जाता है। आदिवासी क्षेत्रों में आयोजित होने वाले वार्षिक/द्वि वार्षिक/त्रि वार्षिक 'जात्रा' या 'मंडई/मङ्डई' आकर्षण का केन्द्र होते हैं जिसका लोगों को बेसब्री से इंतजार होता है। बस्तर क्षेत्र में भंगाराम जात्रा, मावली मंडई, लिंगो पेन करसाड़, मावली मंडई, घोटपाल मंडई, रामाराम मेला, चिकटराज मेला, फागुन मंडई आदि प्रसिद्ध वार्षिक मेले हैं।



करसाड़

करसाड़ शब्द द्रविड़ भाषा के 'कर्स' शब्द से सम्बन्धित है, जिसका अर्थ नृत्य से संबंधित है। इस प्रकार देवताओं की पूजा व सम्बन्धित नृत्य उत्सव करसाड़ है। इस पूजा को जात्रा अर्थात् बस्तर के जनजातीय क्षेत्र में किसी देव-देवी की वार्षिक पूजा माना जा सकता है, जिसमें आदिवासी समूह अपने आराध्य देव की पूजा-अर्चना, विधि-विधान पूर्ण कर उनके विग्रहों का जुलूस निकालते हैं व गीत-नृत्य करते हैं।

"करसाड़" बस्तर के जनजातियों के गोत्र देव का सामूहिक आराधना पर्व है। ऐसा माना जाता है कि प्राचीन समय से इन जनजातियों के निवास क्षेत्र का विभाजन गोत्र आधारित रहा है, इस कारण किसी क्षेत्र विशेष में किसी गोत्र के परिवारों की बहुलता दिखायी देती है। ऐसे क्षेत्र के किसी गांव में क्षेत्र के बहुल गोत्र के गोत्र देव अर्थात् कट्टा पेन का गुड़ी या मंदिर होता है। जिनके पूजा पर्व को 'करसाड़' कहा जाता है।

इसी प्रकार कालान्तर में ग्राम में सांस्कृतिक कारणों जैसे- लमसेना या घरजमाई विवाह, पलायन विवाह, दूसरे क्षेत्र से पलायन कर ग्राम में बसाहट, दूसरी जाति के परिवारों की बसाहट आदि कारणों से एक क्षेत्र में दूसरे गोत्र के परिवारों की बसाहट हुई है। इसी प्रकार से अन्य जाति के परिवार भी बस गये हैं, किंतु सभी गोत्र, उनके देवी-देवता, अन्य जाति की करसाड़ पर्व में सहभागिता होती है।

करसाड़ पर्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, मुख्य देव से संबंधित क्षेत्र के सभी देवी-देवताओं का करसाड़ में सहभागिता। ऐसा माना जाता है कि मानव समाज की तरह अलौकिक दैवीय समाज है।





जिस प्रकार समाज में मनुष्य दूसरे व्यक्तियों से रक्त व वैवाहिक संबंधों से बंधा होता है उसी तरह दैवीय समाज में देवी-देवताओं के दूसरे देवी-देवताओं से रक्त व वैवाहिक नातेदारी होती है। इस कारण धार्मिक आयोजनों में संबंधी देवी-देवताओं को नियमपूर्वक आमंत्रित किया जाता है व आगमन पर विधिवत् सत्कार व मान-सम्मान किया जाता है। इस प्रकार देवी-देवताओं के आगमन व आयोजन में परोक्ष रूप से क्षेत्रीय जनों का आपस में मेल मिलाप होता है। आपसी संबंध प्रगाढ़ होते हैं, वैवाहिक संबंध, सामाजिक-आर्थिक सहयोग आदि को बढ़ावा मिलता है। यह क्षेत्रीय एकता व बंधुत्व भावना में वृद्धि करता है।

करसाड़ पर्व का आयोजन प्रतिवर्ष जनवरी से मई के मध्य किया जाता है। करसाड़ पर्व, गोत्र देव के विशेष आराधना का पर्व है जिसमें सामूहिक रूप से अपने ईष्ट देव की पूजा कर गत वर्ष की अच्छी फसल, सभी की कुशलता के लिये धन्यवाद ज्ञापित कर आगामी वर्ष में क्षेत्र, ग्राम व परिवार की सुरक्षा, सुख समृद्धि, फसल व पशुओं की रक्षा हेतु कामना किया जाता है। सामान्यतः यह दो या तीन से लेकर पांच दिनों का होता है। इसमें पूजा विधान, आमंत्रित क्षेत्रीय देवी-देवताओं की पूजा, परिक्रमा, जुलूस, सामूहिक नृत्य आदि होते हैं।

उद्देश्य

'दंतेवाड़ा जिले का घोटपाल मङ्गड़ी' का मोनोग्राफ अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्नांकित है-

1. दंतेवाड़ा जिले के घोटपाल मङ्गड़ी का सामाजिक-सांस्कृतिक व धार्मिक अध्ययन करना।
2. घोटपाल मङ्गड़ी के आयोजन का उद्देश्य, तिथिवार कार्यक्रम, आमंत्रित देवी-देवता की जानकारी, विभिन्न समुदाय की सहभागिता आदि का अध्ययन करना।
3. घोटपाल मङ्गड़ी के सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व, परिवर्तन, समस्या का अध्ययन करना।



अध्ययन प्रविधि

'दंतेवाड़ा जिले का घोटपाल मंडई' विषय पर दंतेवाड़ा जिले के घोटपाल में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले घोटपाल मंडई या करसाड़ पर्व का मोनोग्राफ अध्ययन किया गया। बस्तर संभाग के जनजातियों में 'करसाड़ पर्व' आयोजित होते हैं। दक्षिण बस्तर क्षेत्र का प्रथम व महत्वपूर्ण जनजातीय पर्व होने के कारण 'दंतेवाड़ा जिले का घोटपाल मंडई' का मोनोग्राफिक अध्ययन किया गया।

इस अध्ययन हेतु 'घोटपाल मंडई' के आयोजन में संलग्न धार्मिक प्रमुख, राजनैतिक प्रमुख, ग्रामवासियों, समिति के सदस्यों, क्षेत्रीय शासकीय कर्मचारियों, जानकार व्यक्तियों से प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया।

प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार, अर्ध सहभागी अवलोकन प्रविधि का उपयोग किया गया। प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु असंरचित साक्षात्कार निर्देशिका तथा छायांकन हेतु डिजिटल कैमरे का उपयोग किया गया। द्वितीयक तथ्यों का संकलन संदर्भ ग्रंथों, शासकीय प्रतिवेदनों व आयोजन समिति के पंजी तथा इंटरनेट में उपलब्ध जानकारी से संकलित किया गया।

अध्ययन अवधि

इस अध्ययन हेतु 9 फरवरी से 25 फरवरी 2021 तक घोटपाल में आयोजित 'घोटपाल मंडई' का अवलोकन अध्ययन कर तथ्यों का संकलन किया गया।

क्षेत्र एवं निवासी

घोटपाल ग्राम, छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण में स्थित दंतेवाड़ा जिला के गीदम तहसील में स्थित है। यह जिला मुख्यालय दंतेवाड़ा व तहसील मुख्यालय गीदम से उत्तर की दिशा में क्रमशः 22 एवं 8 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार घोटपाल ग्राम की जनसंख्या 2617 है। जिसमें 1378 अर्थात् 52.7 प्रतिशत महिलायें तथा 1239 अर्थात् 47.3 प्रतिशत पुरुष हैं। घोटपाल ग्राम की साक्षरता दर 29.6 प्रतिशत है। ग्राम की कुल जनसंख्या का 90.4 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या है। घोटपाल ग्राम में माड़िया व मुरिया जनजाति की बहुलता है। इसके अलावा ग्राम में कलार, राउत जाति के व्यक्ति निवास करते हैं।

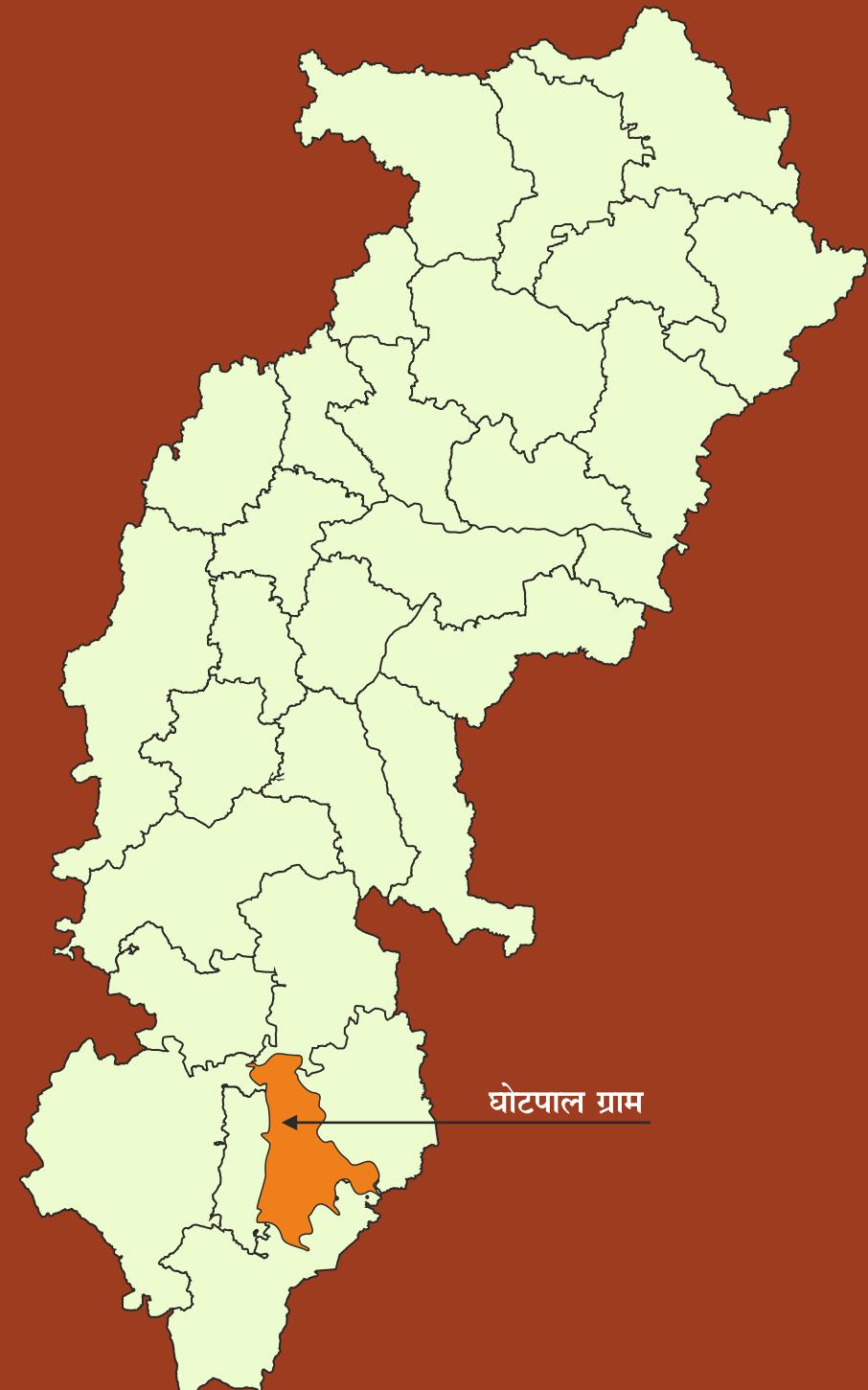
घोटपाल ग्राम की सामान्य जानकारी

ग्राम पंचायत का नाम - घोटपाल-1

घोटपाल ग्राम के चारों ओर स्थित ग्रामों के नाम- कटुलनार, नांगुल, गीदम, हीरानार, जोड़ातरई, रांजे, नागफनी, परपा।

- ग्राम पंचायत में वार्ड की संख्या- 16
- शैक्षणिक संस्थायें- 9
- प्राथमिक शाला- 7
- माध्यमिक शाला- 2
- छात्रावास- 1
- स्वास्थ्य सुविधायें- उप स्वास्थ्य केन्द्र
- राशन दुकान- 1
- आंगनबाड़ी- 7
- विद्युत सुविधा- हॉ
- पेयजल- हैंडपंप, सोलर पंप
- पहुंच मार्ग- पक्का

छत्तीसगढ़



इतिहास



घोटपाल मंडई का आयोजन काफी प्राचीन है। इसके संबंध में लिखित इतिहास का अभाव है। पं. केदारनाथ ठाकुर ने “बस्तर भूषण” (1908) में माड़िया जाति की उत्पत्ति के संबंध में लिखा है कि, “जगत की उत्पत्ति के विषय में इन लोगों का कहना है कि पहिले संसार में पानी ही पानी था। जमीन नाम को नहीं थी, उस पानी में एक सूखा वो पोला तुम्बे का फल था, उसमें डड़े बुरका कोवासी नाम का सधुप्य था। भीमा देव जो वन में सब देवों से बड़ा वो मालिक है, बेहड़ा मारने लगा।बिहड़ा मार के भी देव चला गया और डड़े बुरका कोवासी, अपनी औरत के साथ तुंबा से बाहर आया। तुंबा के फल खाना डड़े बुरका कोवासी का बनाया हुआ है। कुछ रोज बाद डड़े बुरका कोवासी के दस लड़के वो दस लड़कियां दस इन्द्रियों से पैदा हुए। ये सब लड़के लड़कियां पालनार के जंगल में पैदा हुए। मां बाप ने लड़के लड़कियों की आपस में शादी कर दी और उन लोगों के नाम कछिन, मुचकी, माड़वी, माड़कमी, लेकामी, कोवासी, मिडियामी, पुन्नेम, कुजामी, कड़ती, कड़ती रखें ये ही इस गोत्र उनके हुए।”

उपरोक्त तथ्य से स्पष्ट होता है कि लेकामी गोत्र माड़िया जनजाति के प्रारंभिक व प्राचीन गोत्र में से एक है। घोटपाल ग्राम में निवास करने वाले माड़िया-मुरिया जनजाति के बहुसंख्यक सदस्य लेकामी गोत्र के हैं तथा लेकामी गोत्र के गोत्र देव उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) का विशेष पूजा पर्व ‘घोटपाल मंडई’ या ‘घोटुम करसाड़’ के रूप में मनाया जाता है।

अंग्रेज प्रशासक सर डब्ल्यू. वी. ग्रिगसन ने “The Maria Gonds of Bastar”(1938) के पृष्ठ 51 में उल्लेख किया है कि “Formely, the legend says, Pat Raja, the log-god of Mornar is in the Mangnar Pargana who is regarded almost as the overlord of the all the log-gods of the Hill Marias, and his wife's brother Use Modia, the log-god of the Lekami clan at Ghotpal, a large Bison-horn village south of the Indrawati, between Barsur and Gidam, divided up the Hill and Bison-horn Marias into dadabhai and akomama clans (brother-clans and wife-clans), and in those days the Hill Marias used to in term marry with the Bison-horn, and each used to attend the other's festivals. One day, as the Gumelor clan of Hill Marias, which occupies a group of villages in Bhairamgarh Mar, Dantewada Mar and Mangnar, was trooping to Ghotpal to dance at the Koqsar festival there, carrying their axes on their shoulders, a Gume with his axe accidentally severed the sem bean wine of the old widow (Kurum Mutta's) who thereupon put a curse on all the Hill Marias and forbade them ever again to come south of the Mander river for social or religious purposes. Since then, according to the Hill Marias, intermarriage and participation in each other's festival has ceased. On the other hand some Hill Marias say that there is no theoretic obstacle to intermarriage, but that actually 'it isn't done' through they occasionally take part in each other's festival.

अर्थात् एक किवदंती के अनुसार मंगनार परगना के आंगा देव पाट राजा जो मुरनार में हैं, जिन्हें लगभग हिल माड़िया के सभी आंगा देवों के अधिपति के रूप में माना जाता है, और उनकी पत्नी के भाई उसे मोदिया, घोटपाल में लेकामी गोत्र के आंगा देव हैं। घोटपाल, इंद्रावती के दक्षिण में बारसूर एवं गीदम के बीच स्थित बड़ा बायसन-हार्न ग्राम है। हिल माड़िया एवं बायसन हार्न माड़िया को दादामाई और अक्कोमामा गोत्र (भाई गोत्रों एवं पत्नी गोत्रों) में विभाजित किया गया था और उन दिनों हिल माड़िया, बायसन हार्न माड़िया के साथ विवाह करते थे एवं एक-दूसरे के त्यौहारों में भाग लेते थे। एक दिन गुमेलोर गोत्र के हिल माड़िया जो भैरमगढ़ माड़, दंतेवाड़ा माड़ एवं मंगनार में गांव के एक समूह पर कब्जा कर रहा था। घोटपाल के कक्षसाड़ उत्सव में नृत्य

करने के लिये अपने कंधे पर कुल्हाड़ी लेकर जा रहा था। एक गुमे ने गलती से कुल्हाड़ी से एक बुजुर्ग विधवा (कुरुम मुत्ता के) के सेम की बेल को काट दिया। जिसके बाद अभिशाप स्वरूप सभी हिल माड़ियाओं पर सामाजिक या धार्मिक उद्देश्यों के लिये कभी भी मंडेर नदी के दक्षिण में आने पर रोक लगा दिया गया। हिल माड़ियाओं के अनुसार, उसके बाद से, एक-दूसरे से अंतर्विवाह एवं त्यौहार में भागीदारी बंद हो गई। दूसरी ओर कुछ हिल माड़िया कहते हैं कि अंतर्विवाह के लिये सैद्धांतिक रूप से कोई बाधा नहीं है लेकिन वास्तव में यह ऐसा नहीं किया जाता है, वे कभी-कभी एक-दूसरे के त्यौहार में भाग लेते हैं।

उपरोक्त तथ्य घोटपाल मङ्गई की प्राचीनता स्पष्ट होती है। यह माना जाता है कि जब से माड़िया जनजाति के लेकामी गोत्र के गोत्रदेव उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) को घोटपाल ग्राम में स्थापित किया गया तब से घोटपाल ग्राम में प्रतिवर्ष उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) का करसाड़ उत्सव मनाया जाने लगा। मसेनार ग्राम के ग्रामीणों के अनुसार ऐसा माना जाता है कि पूर्व में उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) मसेनार ग्राम में थे तथा मसेनार ग्राम से, उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) घोटपाल आये हैं। संभवतः मसेनार ग्राम से माड़िया-मुरिया जनजाति के सदस्य इस क्षेत्र में आकर बसे व अपने साथ गोत्र देवता को इस स्थान में स्थापित किया होगा।







माड़िया जनजाति

माड़िया जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण क्षेत्र में स्थित नारायणपुर, कोंडागांव, बस्तर, दंतेवाड़ा, सुकमा एवं बीजापुर जिले में निवास करती है। यह जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के अलावा महाराष्ट्र, उड़ीसा, तेलंगाना व आंध्र प्रदेश राज्य में निवास करती हैं। इन्हें माड़िया तथा नृत्य में पुरुष सदस्यों द्वारा धारित गौर सिंग युक्त मुकुट के आधार पर इन्हें “बायसन हार्न माड़िया” भी कहा जाता है। वे स्वयं को कोया, कोई तूर कहते हैं।

बस्तर के माड़िया गोंड पर आधारित सर डब्ल्यू. वी. ग्रिगसन के ग्रन्थ “The Maria Gonds of Bastar” (1938) में माड़ियाओं को उनके निवास क्षेत्र के आधार पर दो भागों, अबूझमाड़ के पर्वतों के हिल माड़िया तथा इंद्रावती नदी के दक्षिण भाग में निवासरत बायसन हार्न माड़िया में विभाजित किया है। दंडामी माड़िया जनजाति में गोंडी बोली प्रचलित है। प्रस्तुत अध्ययन माड़िया जनजाति के गोत्र देव की विशेष पूजा उत्सव “करसाड़” पर आधारित है। इस

संदर्भ में माड़िया जनजाति का सामान्य परिचय व संस्कृति का परिचय प्रासंगिक प्रतीत होता है।

भौतिक संस्कृति

माड़िया जनजाति वन एवं पर्वतीय क्षेत्र में निवास करती है। ग्राम, पाराओं में बंटा होता है व आवास दूर-दूर होते हैं। ग्राम क्षेत्र में ग्राम देवी की देवगुड़ी व अन्य देवी-देवताओं का मंदिर होता है। मंदिर के चारों ओर लकड़ी के खंबों या पत्थरों की दीवार का घेरा होता है। ‘विस्क बट’ या स्मसान ग्राम से बाहर होता है। स्मृति स्तंभ क्षेत्र मुख्य मार्ग, तिराहा या चौराहा के किनारे होता है। माड़िया जनजाति के प्रमुख ग्राम में प्राचीन परंपरा अनुसार गोत्र देव का मंदिर स्थापित होता है। जिसमें प्रतिवर्ष करसाड़ के रूप में विशेष पूजा उत्सव होता है।



जीवन संस्कार

माड़िया जनजाति में मासिक चक्र रूकने से गर्भ का ज्ञान होता है। ग्राम की जानकार स्त्रियों द्वारा घर की परछी या कमरे में प्रसव करवाया जाता है। लड़का होने पर तीर से तथा लड़की होने पर हंसिया से नाल काटते हैं। वर्तमान में संस्थागत प्रसव होने लगा है। नाल को आंगन में गड़दे में गाड़ते हैं। नाल झड़ने के बाद छठी का आयोजन होता है। इसके कुछ दिनों के बाद बच्चे का नामकरण किया जाता है।

माड़िया जनजाति में ममेरे-फुफेरे विवाह को अधिमान्यता प्राप्त है। इनमें एकल तथा सकारण बहुपती विवाह प्रचलित है। माड़िया जनजाति में जीवन साथी प्राप्ति हेतु सहमति विवाह, पलायन विवाह, लमसेना विवाह, हरण विवाह तथा पुनर्विवाह का प्रचलन है। इनमें 'खरचा' अर्थात् वधु मुल्य प्रथा प्रचलित है।

माड़िया जनजाति परिवार में मृत्यु होने पर शव दाह व दफनाने की परंपरा है। निश्चित समय पश्चात् मृतक की याद में स्मृति स्तम्भ स्थापित किया जाता है। किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर दस दिन पश्चात् या एक साल के अन्दर उस मृत व्यक्ति का क्रिया कर्म कर स्मृति स्तम्भ स्थापित किया जाता है।

सामाजिक जीवन

माड़िया समाज में परिवार मूल इकाई है। परिवार के नातेदार एक या आसपास के ग्रामों में निवास करते हैं। माड़िया जनजाति में गठन के आधार पर केन्द्रीय, संयुक्त तथा विस्तृत परिवार पाये जाते हैं। माड़िया जनजाति में वैवाहिक स्थिति के आधार पर एकल विवाही एवं बहुपती विवाही परिवार पाये जाते हैं। माड़िया परिवार पितृसत्तात्मक परिवार है अर्थात् परिवार में पिता प्रमुख होता है। माड़िया जनजाति में आवास के आधार पर पितृस्थानीय एवं नव-स्थानीय परिवार पाये जाते हैं। माड़िया जनजाति में "कट्टा" (गोत्र) एवं गोत्र चिन्ह (टोटम) पाये जाते हैं। सम्पूर्ण माड़िया समाज गोत्र, वैवाहिक तथा सामाजिक सम्बन्धों के नियमन के लिये अनेक भातृदल में विभाजित है। जिसे "ददालतमोर" एवं "अक्कोमामा" कहा जाता है।



आर्थिक जीवन

माड़िया जनजाति का आर्थिक जीवन प्रकृति व श्रमपर आधारित है। परिवार उत्पादन की इकाई के रूप में कार्य करता है। वे अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति संकलन, शिकार, मछली मारना, पशुपालन, परंपरागत कृषि एवं मजदूरी आदि मिश्रित कार्यों के माध्यम से करते हैं।



धार्मिक जीवन

माड़िया धर्म आत्मा, गोत्र, पूर्वज एवं प्राकृतिक शक्तियों पर विष्वास आधारित है। माड़िया जनजाति के सदस्य दंतेश्वरी देवी, मावली देवी, भैरम देव, परदेशीन माता, गोत्र पेन तथा पूर्वज देव की पूजा करते हैं। माड़िया परिवार में गृह देवी-देवता, पूर्वज या "अनाल पेन" होता है। ग्रामगुड़ीया ग्रामदेवी-देवता का मंदिर में ग्रामदेवी देवता की पूजा करते हैं।

माड़िया त्यौहार के माध्यम से प्रकृति की आराधना कर उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। वे नयी फसल तथा नये फल-सब्जियों को अलग-अलग त्यौहार में देवी देवताओं अर्पित करने के पञ्चात ही उपभोग करते हैं। इनके प्रमुख त्यौहार अमुस (हरियाली), जोन्ना कोड़तांग (मक्का खाने का त्यौहार), वन्जा कोड़तांग (नवाखानी), पूना कोहला (नया कोसरा खाने का पर्व) हैं। माड़िया जनजाति में करसाड़ (गोत्र देव की पूजा पर्व) है।

राजनैतिक जीवन

माड़िया जनजाति का राजनैतिक संगठन वंश परम्परा पर आधारित है। ग्राम के प्रमुख को 'पटेल' कहा जाता है। अनेक ग्रामों से मिलकर 'परगना' बना होता है। सम्पूर्ण क्षेत्र अनेक परगनों में विभाजित है। उसके प्रमुख को 'परगना मांड़ी' कहते हैं। 'परगना मांड़ी' परगना के ग्रामों के पटेलों का नेतृत्व करता है। राजनैतिक संगठन का कार्य समाज की सामाजिक-धार्मिक-राजनीतिक व्यवस्था बनाये रखना होता है।

लोक परंपराएँ

माड़िया जनजाति में अनेक प्रकार के नृत्य पाये जाते हैं। माड़िया सदस्य विवाह, मेला-मंडई, पर्व तथा धार्मिक उत्सव में एवं मनोरंजन हेतु गौरसिंग नृत्य करते हैं। शिकार नृत्य में माड़िया नर्तक दल पशु शिकार का दृश्य नृत्य के माध्यम से जीवंत करते हैं। गेंडी नृत्य, माड़िया जनजाति में प्रचलित विशेष नृत्य प्रकार है। माड़िया जनजाति के विवाह में नृत्य की परंपरा पायी जाती है। माड़िया जनजाति में करसाड़ नृत्य, करसाड़ जात्रा धार्मिक उत्सव में करते हैं। करसाड़, माड़िया जनजाति का प्रमुख त्यौहार है। इसमें गोत्र देव की विशेष पूजा किया जाता है। माड़िया जनजाति में 'पेंदूल पाटा' (विवाह के गीत), करसाड़ पाटा (गोत्र देव जात्रा के गीत), 'अनाल पाटा' (मृत्यु संस्कार के गीत), पेद्देड़ पाटा (नामकरण संस्कार के गीत) आदि का प्रचलन है।



दंतेवाड़ा जिले का घोटपाल मंडङ्ग





घोटपाल मंडई

घोटपाल मंडई जिसे स्थानीय जन 'घोटुम करसाड़' के नाम से जानते हैं। वास्तव में घोटपाल ग्राम को गोंडी बोली में 'घोटुम' संबोधित किया जाता है। यह 'घोटुम' शब्द परिवर्तित होकर घोटपाल के नाम से प्रचलित हुआ है। इस ग्राम के निवासियों जिसमें माड़िया-मुरिया जनजाति की बहुलता है। उनके गोत्र देव उसेंडी तादो पेन (उसेंड मुयतोर) के वार्षिक उत्सव को करसाड़ कहा जाता है। इस प्रकार 'घोटुम करसाड़' सामान्य रूप से घोटपाल मेला या घोटपाल मंडई के नाम से प्रसिद्ध है। यह घोटपाल ग्राम के मंडई पारा में मनाया जाता है। वर्ष-2021 में 'घोटुम करसाड़' (घोटपाल मेला) 2021 का कार्यक्रम इस प्रकार है।

घोटपाल मंडई कार्यक्रम-2021

- ❖ 9 फरवरी 2021 मंगलवार से 14 फरवरी 2021 रविवार तक ढोल जगरानी
- ❖ 15 फरवरी 2021 सोमवार, गादी रिकानी
- ❖ 16 फरवरी 2021 मंगलवार से 21 फरवरी 2021 रविवार ढोल द्वारा घर-घर संदेश मंडई न्यौता
- ❖ 22 फरवरी 2021 सोमवार, पेन अनाल सेवा अर्जी
- ❖ 23 फरवरी 2021 मंगलवार, पेन करसाड़, मेला मंडई
- ❖ शाम 8.00 बजे से प्रातः 8.00 बजे तक विभिन्न कार्यक्रम
- ❖ आदिवासी नानोली वैया नृत्य, माड़िया नृत्य, कीर्तन एवं नाट का आयोजन
- ❖ 24 फरवरी 2021 बुधवार, देवी-देवताओं की विदाई

❖ 25 फरवरी 2021 गुरुवार, सिंगार उतारनी एवं मेला समापन

ढोल जगरानी

घोटपाल मंडई का प्रथम कार्यक्रम ढोल जगरानी होता है। यह घोटपाल मंडई या करसाड़ के 14 दिन पूर्व मंगलवार को आयोजित किया जाता है। इस कार्यक्रम में घोटपाल ग्राम के धार्मिक क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले घोटपाल, जोड़ातरई, हाउरनार, नागफनी, परपा, नाकापारा, हीरानार ग्राम व पारा में धार्मिक प्रमुख अर्थात् पुजारी के घर में रखे गये ढोल को निकालते हैं। इस कार्यक्रम में पूर्व दिवस अर्थात् सोमवार की शाम पुजारी व ग्रामवासी एकत्र होते हैं व ढोल जगरानी कार्यक्रम व करसाड़ पर्व के संबंध में चर्चा करते हैं व भोजन पकाकर खाते हैं। अगले दिन मंगलवार शाम को वहु उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) की पूजा करता है व उनसे प्रार्थना करता है कि इस वर्ष का आयोजन कुशलतापूर्वक संपन्न हो जाये। ग्राम के किसी व्यक्ति को रोग, कष्ट व अनिष्ट न हो। इस प्रकार पूजन व प्रार्थना संपन्न कर पुजारी के घर में रखे गये ढोल को निकाला जाता है व मंगलवार से बैठकर ढोल बजाने का कार्यक्रम प्रारंभ करते हैं। यह प्रक्रिया घोटपाल के साथ-साथ जोड़ातरई, हाउरनार, नागफनी, परपा, नाकापारा, हीरानार में किया जाता है। मंगलवार से प्रारंभ ढोल बजाने का कार्यक्रम रविवार तक जारी रहता है। इसमें प्रतिदिन संध्या काल में ग्राम के सदस्य लगभग 8.00 बजे से 11.00 बजे तक बैठकर ढोल बजाते हैं। इस प्रकार प्रारंभ के छह दिनों तक ढोल जगरानी कार्यक्रम अंतर्गत करसाड़ ढोल को बजाया जाता है, यह माना जा सकता है कि यह घोटपाल ग्राम व आसपास के ग्रामों के निवासियों को साकेतिक रूप से करसाड़ पर्व के आगमन की सूचना देता है।



गादी रिकानी

घोटपाल मंडई उत्सव श्रृंखला अंतर्गत गादी रिकानी महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। यह घोटपाल मंडई के आठ दिन पूर्व सोमवार को मनाया जाता है। इसमें 'गद' अर्थात् बांस से निर्मित 3-4 फीट ऊँचा उल्टे शंकु आकार के पात्र में नये अनाज, कंद, दलहन आदि देवी को अर्पित किया जाता है। गादी रिकानी पर्व में क्षेत्र में निवासरत परिवार के सदस्य उपस्थित होकर माटी पूजा करते हैं। गादी रिकानी पर्व को दूसरे क्षेत्र में गादी पंडुम भी कहा जाता है। यह भूमि या माटी की पूजा का त्यौहार है। इसमें माटी की पूजा कर सभी फसल का बीज देवी को अर्पित किया जाता है।

पूजन स्थल-

गादी रिकानी पर्व 'कर्रे' में मनाया जाता है। माड़िया व मुरिया जनजाति के ग्राम में ग्राम देवी का स्थान 'कर्रे' कहलाता है। यह बसाहट से पृथक वन में स्थित होता है। इसमें ग्राम में सर्वप्रथम बसने वाले परिवार या गोत्र का सदस्य पूजा करता है। जिसे माटी या ग्राम पुजारी कहते हैं, इस जगह का वृक्ष नहीं काटते। कर्रे में तीन वर्ष में एक बार बछड़ा की बलि देते हैं। शिकार में जाने से पूर्व कर्रे में पूजा किया जाता है। घोटपाल क्षेत्र में 12 कर्रे होता है जिसमें सबसे पहले 'भंडार कर्रे' में गादी रिकानी किया जाता है। इसके बाद दूसरे क्षेत्र में होता है।

देवी-देवता-गादी रिकानी पर्व में 'कर्रे' में सोनादेई माता की पूजा किया जाता है। इस स्थल पर पूजा पूर्ण होने के बाद पेन गुड़ी में उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) की पूजा किया जाता है।





नियम व निषेध-

गादी रिकानी पर्व से संबंधित क्षेत्र में कुछ नियम प्रचलित हैं, जिनका विवरण निम्नांकित है-

1. इस त्यौहार के पूर्व क्षेत्र के किसान अपने खेत में या उसके समीप वृक्ष के नीचे आग नहीं लगाते हैं। कोठार के पैरा या पुआल को भी नहीं जलाया जाता है।
2. नया आवास बनाने पर इस त्यौहार के बाद ही कांडा पाटी अर्थात् बल्लियों को छत पर आधार के लिये लगाया जाता है व दीवार की छबाई किया जाता है।
3. घोटपाल मंडई में जितने ग्राम व पारा से ढोल व तोड़ी लेकर ग्रामीण आते हैं उन सभी गांवों या पारा में आज के दिन ही गादी रिकानी पर्व मनाया जाता है।
4. इस त्यौहार के बाद कर्रे स्थल पर एक गड़ा खोदकर मिट्टी बाहर निकाला जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि इस दिन से मंडई पूर्ण होने तक गांव का कोई परिवार मिट्टी से संबंधित कार्य नहीं करेगा। मंडई पूर्ण होने के उपरांत इस गड़े में मिट्टी को पुनः भर दिया जाता है। इसके बाद ही ग्राम में मिट्टी संबंधी कार्य प्रारंभ किया जाता है।

इन नियमों व निषेधों का पालन करना अनिवार्य होता है यदि किसी परिवार द्वारा नियमों का पालन नहीं किया जाता है तो कर्रे की देवी को 'दंडुम' देना पड़ता है। ऐसे परिवार से दो मुर्गा या सूअर दंड स्वरूप लिया जाता है।

पूजा की तैयारी- गादी रिकानी पर्व के नियत दिन सुबह से ही ग्राम के युवा सदस्य 'कर्रे' में एकत्रित होते हैं। वे पूजन स्थल की साफ-सफाई करते हैं, कुछ युवावन से बांस काट कर लाते हैं व लगभग चार फीट लंबे बांस के एक सिरे को पतले-पतले भाग में लगभग डेढ़ फीट तक चीर कर बांस की पट्टियों से गोल बुनाई करते हैं जिससे वह एक चाड़ी या कुप्पी नुमा आकार बन जाता है। इसे 'गद' कहते हैं, इसमें पूजा के उपरांत अनाज व अन्य फसल गिराते हैं। इसी के आधार पर इस पर्व का नाम 'गादी रिकानी' पड़ा है। 'गद' दो बनाया जाता है। एक बंधुज गोत्रीय या 'ददाल तमुर' के लिये व दूसरा, 'अक्को मामा' या विवाह गोत्रीय सदस्यों के लिये बनाया जाता है। 'गद' बनाने के उपरांत उस पर मिट्टी का लेप चढ़ाया जाता है जिससे अनाज डालने पर बाहर न गिरे। इसके बाद पूजन स्थल के समीप मंडप बनाकर दोनों 'गद' को स्थापित कर देते हैं। मंडप

पर छिंद के पत्तों को डाला जाता है व चारों ओर आम पत्ते का तोरण लगाया जाता है।

पूजा कार्यक्रम-

गादी रिकानी पर्व के दिन नियत समय लगभग 11 बजे से ग्रामवासी कर्रे में एकत्रित होने लगते हैं, वे अपने साथ गादी में अपित करने के लिये धान, मक्का, राहर, मूंग, उड़द, कंद आदि दोने में लेकर आते हैं। कुछ परिवार के सदस्य बलि के लिये मुर्गा-मुर्गा लेकर आते हैं। इसके बाद पेरमा अर्थात् माटी पुजारी ग्राम देवी की विधिवत् पूजा करता है। वह जल, चांवल, अंडा, अगरबत्ती आदि से देवी-देवताओं की पूजा करता है। पूजा के उपरांत पेरमा के ददाल तमुर गोत्र के सदस्य एक 'गद' में तथा सगा अर्थात् अक्कोमामा गोत्र के सदस्य दूसरे 'गद' में अपने साथ लाये गये अनाज को 'रिकाते' (गिराते) हैं अर्थात् देवी को अपित करते हैं। अनाज अपित करने के बाद अनेक परिवार की ओर से देवी को मुर्गा-मुर्गा की बलि देते हैं, कुछ परिवार जन 'दंडुम' अर्थात् दंड स्वरूप मुर्गा-मुर्गा की बलि देते हैं। पूजा समाप्ति के उपरांत उपस्थित जन अपने-अपने समूह में भोजन व बलि के प्रसाद को पकाते हैं व भोजन उपरांत अपने घर रवाना होते हैं।

कर्रे में गादी रिकानी पूजा के दौरान पेरमा अर्थात् माटी पुजारी ग्राम देवी से करसाड़ पर्व मनाने की अनुमति लेते हैं। इसके बाद माटी पुजारी व ग्राम के सदस्य उसें देवगुड़ी में जाते हैं व पूजा करते हैं। घोटपाल ग्राम में मंडई के लिये निकाले गये ढोल को छह दिनों तक गुड़ी परिसर में संध्याकाल में बैठकर बजाया जाता था। गादी रिकानी पर्व मनाने के बाद ढोल को खड़े होकर बजाना प्रारंभ करते हैं अर्थात् गादी रिकानी के दिन से ढोल बजाकर नृत्य करना प्रारंभ करते हैं। इस प्रकार प्रारंभ के छह दिनों तक ढोल जगरानी कार्यक्रम अंतर्गत करसाड़ ढोल को बजाया जाता है, यह माना जा सकता है कि यह घोटपाल ग्राम व आसपास के ग्रामों के निवासियों को सांकेतिक रूप से करसाड़ पर्व के आगमन की सूचना देता है। गादी रिकानी पर्व के दिन से खड़े होकर ढोल बजाते हैं अर्थात् ढोल बजाकर नृत्य करते हैं। गादी रिकानी पर्व के दिन से करसाड़ पर्व के लिये आमंत्रण का कार्य प्रारंभ किया जाता है। इसके लिये ढोल लेकर नर्तक दल क्षेत्र के ग्रामों में घर-घर जाकर मंडई आयोजन की सूचना देते हैं व आमंत्रित करते हैं। इसी प्रकार पुजारी व धार्मिक प्रमुख क्षेत्र के ग्रामों में जाकर देवी-देवताओं को आमंत्रित करते हैं।



निमंत्रण

गादी रिकानी पर्व के साथ ही घोटपाल मङ्डई के लिये निमंत्रण देने का कार्य प्रारंभ किया जाता है। घोटपाल मङ्डई मूलतः माड़िया व मुरिया जनजाति के लेकामी गोत्र के देव उसेंडी देव के वार्षिक पूजा का पर्व अर्थात् करसाड़ पर्व है। घोटपाल ग्राम प्राचीन रियासत कालीन परगना व्यवस्था के अंतर्गत फरसपाल परगना के अंतर्गत आता है। इस पर्व में फरसपाल परगना के अंतर्गत शामिल ग्रामों के देवी-देवता, परंपरागत व आधुनिक जनप्रतिनिधियों तथा जन समुदाय को आमंत्रित किया जाता है। इस पर्व हेतु गादी रिकानी के अगले दिन मंगलवार से रविवार तक छह दिन मङ्डई हेतु आमंत्रण व संदेश दिया जाता है। आमंत्रण की विधि निम्नांकित है-

1. देवी-देवताओं को निमंत्रण

इसमें उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) से संबंधित विभिन्न ग्रामों के देवी-देवता को आमंत्रित किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि मानव समाज के समान देवी-देवताओं का अपना अलौकिक समाज है, जिसमें देवी-देवता विभिन्न नातेदारी संबंध से एक दूसरे से जुड़े हुये हैं। ऐसे में उनके विशेष पूजन पर्व में संबंधी देवी-देवताओं को अवश्य आमंत्रित किया जाता है। पुजारी या धार्मिक प्रमुख द्वारा संबंधित देवी-देवताओं को उनके ग्राम में जाकर आमंत्रित किया जाता है। पुजारी या धार्मिक प्रमुख व ग्राम के कुछ सदस्य 'अकुम' (तुरही) व ढोल लेकर जाते हैं व दूसरे गांव के 'गुड़ी' (मंदिर) में जाकर 'अकुम' (तुरही) को फूंककर जोर से नाद करते हैं व ढोल बजाते हैं। जिसे सुनकर 'गुड़ी' (मंदिर) का पुजारी व अन्य ग्रामीण एकत्र हो जाते हैं। सभी के समक्ष घोटपाल ग्राम का पुजारी पर्व की सूचना देकर देवी-देवता व ग्रामीणों को आमंत्रित करता है।

देवी-देवताओं के निमंत्रण के संदर्भ विशेष तथ्य यह है कि इस करसाड़ पर्व में उसेंडी देव की पत्नी तुले डोकरी, ग्राम-कमका जोजोर, ग्राम-मिरतूर के पास, जिला-बीजापुर को अनिष्ट आशंका के कारण आमंत्रित नहीं करते हैं।



2. ग्रामवासियोंकोनिमंत्रण

घोटपाल मंडई में लेकामी गोत्र के सदस्यों को, लेकामी गोत्र के भातृदल (ददालतमुर) के अंतर्गत आने वाले गोत्र के सदस्यों को तथा सगा या विवाह गोत्र (अक्कोमामा) के सदस्यों को आमंत्रित किया जाता है। इसके अलावा परगना के गांवों में निवास करने वाले समस्त जाति के सदस्यों को आमंत्रित किया जाता है। युवाओं की नर्तक टोली ग्राम के सभी पाराओं में सभी घरों में ढोल बजाकर नृत्य करते हुये धूमते हैं व मंडई के आयोजन की सूचना देते हुये आमंत्रित करते हैं। इसी प्रकार युवाओं की टोली क्षेत्र के कस्बों, गांवों में जाकर ढोल बजाकर नृत्य करते हुये धूमते हैं व मंडई आयोजन का प्रचार प्रसार करते हैं।

इस प्रकार छह दिनों तक पूरे क्षेत्र के देवी-देवताओं, संबंधियों व ग्रामवासियों को मंडई हेतु न्यौता या निमंत्रण दिया जाता है।

पेन अनाल सेवा अर्जी

माड़िया व मुरिया जनजाति के धार्मिक रीति अनुसार पूर्वजों की पूजा किया जाता है। वे अपने पूर्वजों को “अनाल पेन” या पूर्वज देव के रूप में पूजा करते हैं। आवास के पूजा कक्ष में स्थापित पूर्वज देव या “अनाल पेन” की विशेष पूजा अवसरों तथा त्यौहारों में पूजा किया जाता है। घोटपाल मंडई एक दिन पूर्व पूर्वज देव या “अनाल पेन” की पूजा किया जाता है। जिसे “पेन अनाल सेवा अर्जी” कहा जाता है। यह सामूहिक रूप से घोटपाल ग्राम में स्थित दो

“अनाल गुड़ी” या “पित्तर गुड़ी” स्थल पर किया जाता है। पहला, उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) गुड़ी परिसर में स्थित “दल अनाल” स्थल पर तथा दूसरा, ग्राम में स्थित “मिसरा अनाल” देव स्थल पर करते हैं। इन स्थलों पर वर्ष में तीन बार बीज पंडुम, नवाखानी व करसाड़ के अवसर पर पूजा किया जाता है। घोटपाल मंडई के एक दिन पूर्व इन स्थलों पर “पेन अनाल सेवा अर्जी” या “अनाल पूजा” या पितृ देव की पूजा किया जाता है। इसमें परिवार के सभी सदस्य उपस्थित होते हैं। पुजारी द्वारा अनाल पेन की पूजा किया जाता है तथा अपने परिवार के सदस्यों की सुरक्षा, कुशलता व समृद्धि की प्रार्थना करता है।

पेन अनाल सेवा अर्जी में पुजारी देव की पूजा कर विशेष प्रार्थना करता है कि घोटपाल मंडई या करसाड़ पर्व निर्विघ्न पूर्ण हो, किसी प्रकार का अनिष्ट न हो। इस प्रकार पूजा पूर्ण होने के उपरांत सभी जन भोजन कर अपने घर लौट जाते हैं।

देवी-देवताओं का आगमन

घोटपाल मंडई में सोमवार से क्षेत्र के विभिन्न ग्रामों के आमंत्रित देवी देवताओं का आगमन प्रारंभ हो जाता है। घोटपाल मंडई या करसाड़ पर्व का आयोजन मंडई पारा में किया जाता है। घोटपाल आने पर उनका स्वागत किया जाता है। इसके पश्चात् ‘काड़ा’ या ‘कड़ा’ अर्थात् मंडई स्थल के मैदान पर वृक्ष के नीचे ठहरने का स्थान दिया जाता है। देवी-देवता व ग्रामीणों के रूकने के स्थल को ‘बंदरम’ कहा जाता है। जैसे- बेलनार बंदरम, तेरलापाल बंदरम आदि। गांव से





पुजारी, देवी-देवता के सेवादार व ग्रामीण सदस्य घोटपाल मंडई में शामिल होने आते हैं। कुछ ग्राम दल में महिलायें भी शामिल होती हैं। जैसे- मसेनार ग्राम के दल गद बोमड़ा व पडलिंगा देव के विग्रह कोला, ढोल व तुरही या अकुम लेकर आये थे। उनके दल में 40-50 सदस्य थे, जिसमें महिला-पुरुष शामिल थे। इस प्रकार सोमवार से मंगलवार सुबह तक सभी देवी-देवता के विग्रह, ढोल, अकुम या तुरही के साथ ग्रामवासी घोटपाल मंडई में पहुंच जाते हैं।



पेन करसाड़ या घोटपाल मंडई

घोटपाल मंडई में घोटपाल ग्राम व समीप के गांवों के देवी-देवता शामिल होते हैं। घोटपाल मंडई क्षेत्र के प्रमुख देव उसेंडी तादो देव की विशेष पूजा पर्व है। इस पर्व में उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) की संतान व संबंधी देवी-देवता शामिल होते हैं।

घोटपाल मंडई में शामिल होने वाले देव, तोड़ी, ढोल व सदस्यों का विवरण इस प्रकार से है जिनके प्रत्येक देव, ढोल, तोड़ी होते हैं।

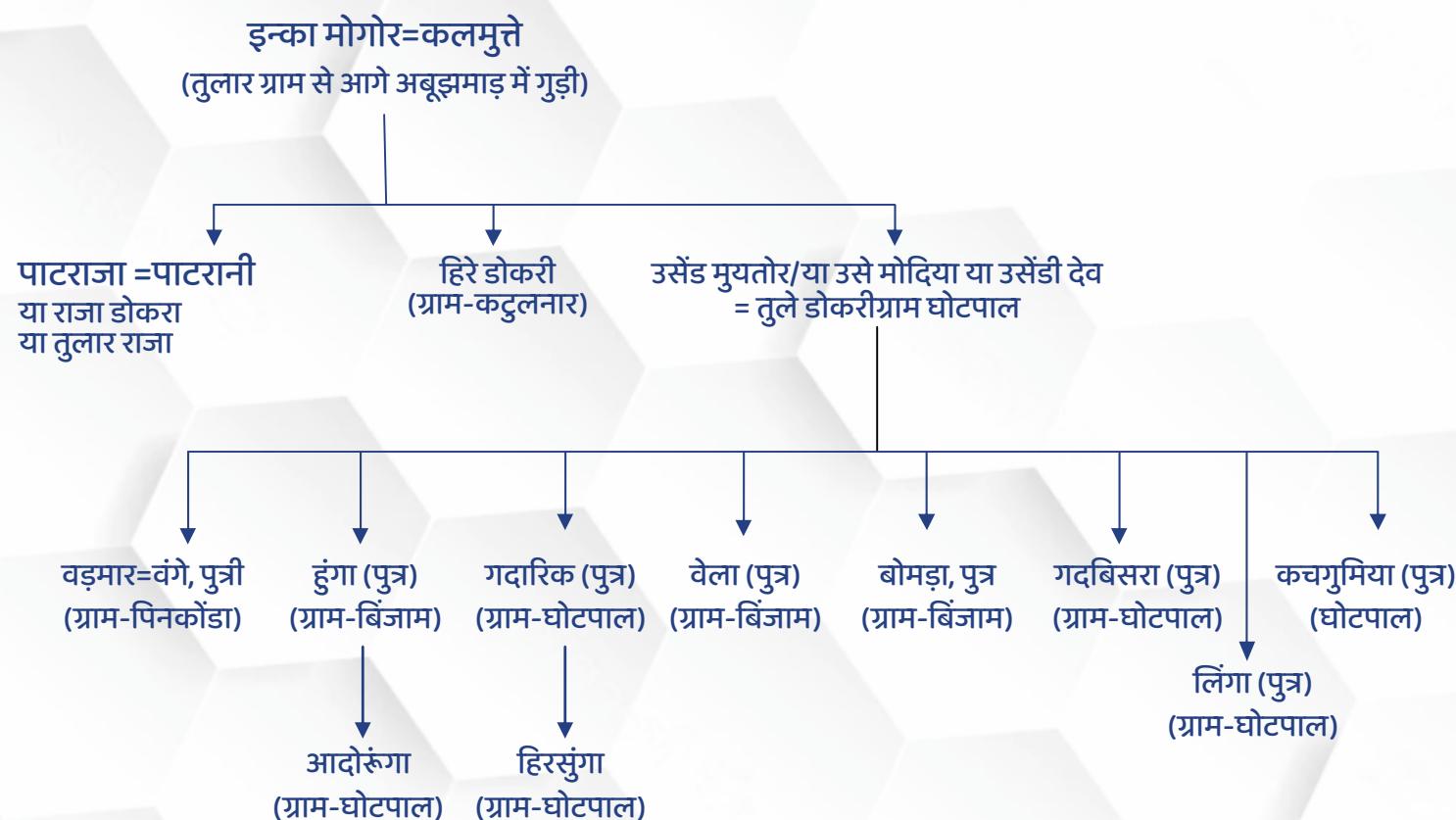
क्र.	देव, ढोल व तोड़ी	देव व तोड़ी	ढोल व तोड़ी	पुजारी व परिवार सदस्य
1.	मसेनार	कोरलापाल	हीरानार	बारसूर
2.	बिंजाम	कारली	हाउरनार	मिचनार
3.	तितिर	कटुलनार	बट्टीनाम	छिंदनार
4.		तेरलापाल	कोडोपारा	गीदम
5.		बेलनार	हिरोली	
6.		नागुल	परपापारा	
7.			नागफनी	
8.			नाकापारा	
9.			भालूनाला	
10.			जोड़ातरई	



उपरोक्त तालिका में घोटपाल मंडई में शामिल होने वाले देव, तोड़ी, ढोल व सदस्यों का विवरण दर्शाया गया है। जिस ग्राम में देव का वास होता है, उन ग्रामों से देव अपने ढोल व तोड़ी के साथ घोटपाल मंडई में शामिल होते हैं। जिन गांवों में देवस्थल नहीं हैं अर्थात् पुराने रीति अनुसार वे सभी ग्राम या पारा घोटपाल ग्राम में शामिल हैं तथा उनके देवस्थल घोटपाल में स्थित हैं। उन ग्रामों या पाराओं से नर्तक दल ढोल व तोड़ी के साथ घोटपाल मंडई में शामिल होते हैं। ये नर्तक दल मंडई के दिन आते हैं व मंडई से देवी-देवताओं की विदाई तक उपस्थित रहते हैं। इसके अलावा दूसरे गांवों के पुजारी व परिवार के सदस्य मंडई में शामिल होते हैं। इस प्रकार घोटपाल मंडई में 12 गांवों के 25 देवी-देवता शामिल होते हैं।

उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) व उनके संबंधियों का विवरण इस प्रकार है-

उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) व उनके संबंधियों का विवरण इस प्रकार है





उपरोक्त वंशवृक्ष में उसेंडी देव के परिवार को दर्शाया गया है। जिसमें उसेंडी देव या उसे मोदिया या उसेंड मुयतोर के पिता इनकामोंगोर तथा माता कल मुते हैं। उसेंडी देव की बड़ी बहिन पाटरानी है। जिनके पति मंगनार परगना के मुरनार के पाट राजा या राजा डोकरा या तुलार राजा हैं जिन्हें आंगा देवों में सबसे बड़ा या अधिपति माना जाता है। उसेंडी देव की मंझली बहिन हिरे डोकरी है। जिनका देव स्थल घोटपाल के उत्तर में स्थित ग्राम-कटुलनार में है। हिरे डोकरी के पति आद मोड़का हैं तथा उनके तीन संतान आरिक देव, कोला कुसो देवी तथा विसराल देव हैं। हिरे डोकरी के पुत्र आदिक का पुत्र बोमड़ा देव है। उसेंडी देव की पत्नी तुले डोकरी हैं, जो वर्तमान में ग्राम-कमका जोजोर, ग्राम-मिरतूर के पास, जिला-बीजापुर में हैं। उसेंडी देव की आठ संतान हैं। जिनमें से सबसे बड़ी पुत्री तथा सात पुत्र हैं। बड़ी पुत्री का नाम वंगे तथा दामाद वडमार हैं तथा ग्राम-पिनकोंडा में देवस्थल है। हुंगा, वेला, बोमड़ा तीनों पुत्र के बिंजाम ग्राम में देव स्थल हैं। ऐष चार पुत्र गदारिक, गदबिसरा, लिंगा तथा कचगुमिया के देव स्थल उसेंडी देव के साथ घोटपाल में हैं। हुंगा का पुत्र आदारुंगा तथा गदारिक का पुत्र हिरसुंगा अर्थात् उसेंडी देव के नाती का देव स्थल उसेंडी देव के साथ ग्राम घोटपाल में है।

उसेंडी देव या उसेंड मुयतोर की पत्नी तुले डोकरी को घोटपाल मंडई में आमंत्रित नहीं किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि उन्हे बुलाने से अनिष्ट घटना घटित होने या कुछ व्यक्तियों की मृत्यु होने की आशंका होती है। इसलिये उन्हे आमंत्रित नहीं किया जाता है। तुले डोकरी मंडई में न आये इसलिये मंडई स्थल की सीमाबंदी किया जाता है। इसमें खराब देशी अंडा, बोदा फल, हुर्रा (मंडिया), लोहे की किले से दांड या सीमा बांधते हैं। सीमाबंदी का कार्य वडु व तीन अय सियान व्यक्ति करते हैं, जिन पर लिंगा, आदुरुंगा व आरिक देव की सवारी आती है व वे ही चार सीमाओं पर सीमाबंदी करते हैं। सीमाबंदी करके आने के बाद देवों का पानी से शुद्धिकरण किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि सीमाबंदी के बाद तुलेडोकरी मंडई में नहीं आती है व मंडई निर्विघ्न संपन्न होता है। करसाड पर्व समाप्त होने के कुछ दिनों के बाद उन्हें सूचना तथा 'खरचा' देकर मान-मनौव्वल किया जाता है।





तुले डोकरी के कमका जो जोर ग्राम जाने संबंधी एक रोचक किवदंती प्रचलित है। ऐसा माना जाता था कि पूर्व में धान, मंडिया, कोसरा, मक्का व अन्य फसल होने पर तुले डोकरी जंगली सूअर, बाघ बनकर फसलों व पशुओं को नुकसान पहुंचाती थी। जब लोगों ने इसकी जानकारी पुजारी से लिया तो उक्त बातें ज्ञात हुईं। जिससे नाराज होकर ग्रामीणों ने उनके प्रतीक आंगा को 'ढोल सूआ' खेत के 'चुंवा' (कुंआ) में फेंक दिया। कुछ दिनों पश्चात् बस्तर दशहरा, जगदलपुर में नृत्य करने गये माड़िया दल गांव वापसी के दौरान कामरा डोंगरी के किनारे रूक कर भोजन पका रहा था। वे पानी लेने उसी 'चुंवा' (कुंआ) में गये तो उसके पानी में बहुत सारी मछलियां दिखाई दे रहीं थीं। जिसे पकड़ने के लिये नर्तक दल के सदस्यों ने पानी फेंकना शुरू किया लेकिन काफी देर प्रयास करने के बाद भी पानी कम नहीं हुआ और मछली पकड़ने में सफलता नहीं मिली तो वे लोग पानी में उतर गये तो उनके पैर से देवी का प्रतीक आंगा टकराया तो उन्होंने उसे बाहर निकाला। उस आंगा को नर्तक दल के सदस्य अपने साथ कमका

जो जोर ले गये वउस ग्राम में देवी को स्थापित किया गया।

इसी प्रकार बस्तर महाराजा के घोटपाल मंड़ई नहीं आने के संबंध में किवदंती प्रचलित है कि पूर्व में यह माना जाता था कि बस्तर महाराजा कुम्हड़ के अंदर से जन्म हुआ है। इसी प्रकार बस्तर महाराजा भी उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) की प्रसिद्धि से परिचित था। इस कारण उसेंडी देव, महाराजा को देखने जगदलपुर जा रहे थे दूसरी ओर बस्तर महाराजा उसेंडी देव से मिलने घोटपाल जा रहे थे। उन दोनों की भेंट मध्य मार्ग में तिरथुम के पास बरगद के जोड़ा वृक्ष के पास हुआ। दोनों एक दूसरे से भेंट कर चर्चा किया व तय किया किया कि बस्तर महाराजा दस दिनों का दशहरा पर्व व उसेंडी देव एक दिन का पर्व मनायेगा। इसके बाद वे दोनों उस स्थल से वापस अपने स्थल को लौट गये। ऐसा माना जाता है कि इसी कारण बस्तर दशहरा में उसेंडी देव नहीं जाते हैं न ही बस्तर महाराजा कभी घोटपाल गांव आये।

करसाड पर्व

घोटपाल मंडई या करसाड पर्व का आयोजन मंडई पारा में किया जाता है। आयोजन स्थल को 'काढ़ा' या 'कड़ा' कहा जाता है। इस स्थल पर पूजा स्थल पर मध्य में देव 'मंडा' (मंडप) तथा उसके एक ओर तीन तथा दूसरी ओर दो 'दन्या' (पत्थर) होते हैं। देव 'मंडा' (मंडप) में उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) के प्रतीक आंगा को रखा जाता है तथा दन्या के किनारे आदन वृक्ष की शखा को गड़ा कर रखा जाता है। जिसके सहारे देवी-देवता के प्रतीक कोला को रखा जाता है। मंडई में पूजा स्थल को प्रत्येक 12 वर्ष में बदला जाता है।

करसाड के दिन प्रातः उसेंडी देव मंदिर में पुजारी व ग्रामीण सदस्य अपने साथ लाये देवताओं के कोला को व्यवस्थित कर 'नूल' (सफेद कच्चा धागा) से बांधते हैं व उसमें मूया (घंटी), गाठी (घंटी), 'मल्ल' (मोर पंख) सजाते हैं। सभी देवी-देवताओं के आगमन के बाद देव गुड़ी से उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) का आंगा व अन्य देवी-देवताओं के कोला ढोल नर्तक दल व ग्रामीणों के साथ जुलूस के रूप में मंडई आयोजन स्थल पर जाते हैं। इस दौरान अलग-अलग ग्रामों से आये देवी-देवता के पुजारी व अन्य धार्मिक सदस्य अपने 'बंदरम' अर्थात् विश्राम स्थल पर ढोल नर्तक दल की धुन में नाचने-झूमने लगते हैं। इसके बाद उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) का आंगा व स्थानीय अन्य देवी-देवताओं के कोला सभी 'बंदरम' में जाकर आये हुये देवी-देवता, पुजारी, ग्रामीणों से भेंट व स्वागत करते हैं। इस दौरान माहौल बेहद उत्साह एवं उल्लासपूर्ण हो जाता है।





देव स्नान

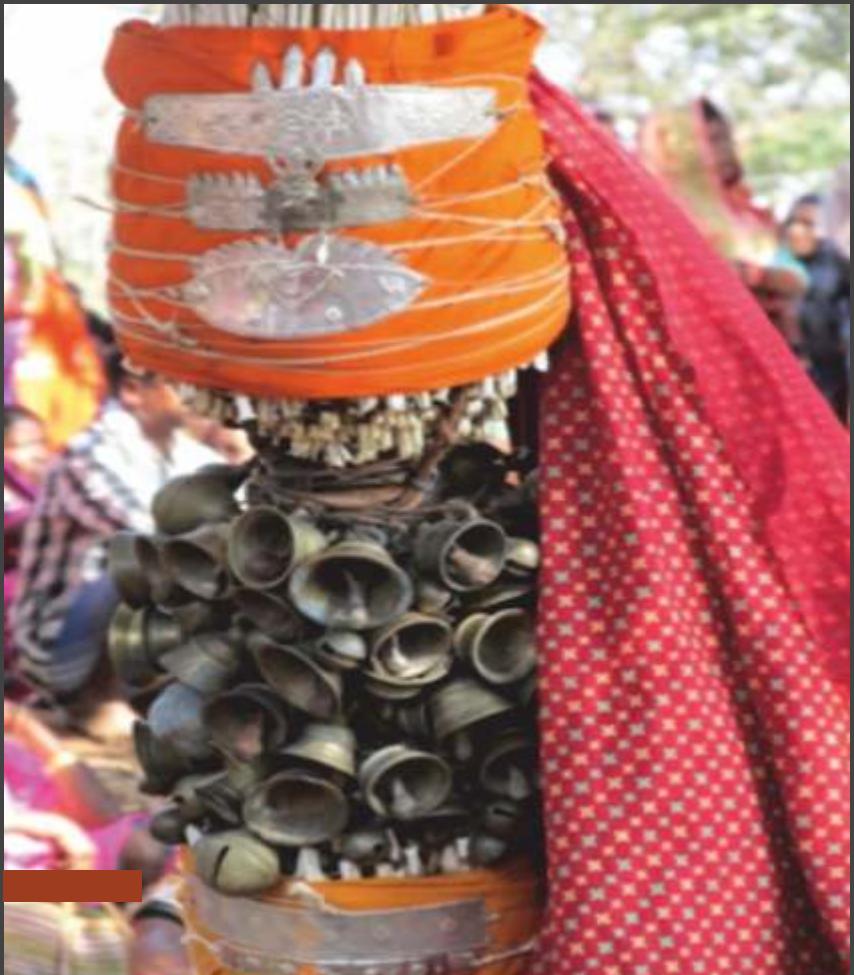
देव मिलन कार्यक्रम पूर्ण होने के उपरांत देव स्नान व शुद्धिकरण होता है। इसमें मंडई में आये हुये समस्त देवी-देवता जुलूस के रूप में तालाब जाते हैं। इस दौरान सिरहा, वड्डे दोने में चांवल लेकर छिड़कते हुये आगे चलते हैं। जुलूस में ढोल नर्तक दल, घंटा, अकुम बजाते हुये ग्रामीण महिला पुरुष का समूह होता है। तालाब पहुंचकर सभी देवी-देवताओं को स्नान कराया जाता है। पुजारी व अन्य धार्मिक जन भी स्नान करते हैं व स्नान के पश्चात् देव विग्रह से टपकने वाले जल को ग्रामवासी बेहद पवित्र मानते हैं। वे उसे हाथों में लेकर माथे में टीका लगाते हैं, पी लेते हैं या शरीर में छिड़कते हैं। स्नान के पश्चात् समस्त देव विग्रह को लेकर जुलूस के रूप में मंडई स्थल पर वापस आते हैं।

देव पूजा

स्नान के पश्चात् मंडई स्थल पर 'कड़ा' में यथा स्थान पर देव विग्रहों को रखा जाता है। इसके बाद पुजारी फूल, अगरबत्ती, चांवल, धान आदि से उसेंडी देव की पूजा करते हैं। अन्य देवी-देवताओं को उनके पुजारी पूजा करते हैं। इसके पश्चात् मन्त्र पूर्ण होने पर या आगामी वर्ष में सुरक्षा हेतु देवी-देवता को ग्रामवासी मुर्गी-मुर्गा, सूअर की बलि देते हैं या फूल, चांवल, अंडा, नारियल, रूपये अर्पित करते हैं। बलि उपरांत सिर देव को अर्पित कर दिया जाता है।

देव श्रृंगार

मंडई स्थल पर 'कड़ा' में पूजन व बलि कार्य पूर्ण होने के उपरांत अन्य ग्रामों से आये देव विग्रह 'कोला' को उनके विश्राम स्थल पर ले जाते हैं। वहां उनका श्रृंगार किया जाता है। कोला में श्रृंगार के लिये रंगीन वस्त्र, चांदी का पट्टा, घंटी, मुया लोगों द्वारा देव को अर्पित किया गया है। ऐसी मान्यता है कि देव के समक्ष किसी मनोकामना पूर्ति हेतु मन्त्रत किया जाता है। मन्त्रत पूर्ण होने पर व्यक्ति या परिवार जन द्वारा रंगीन वस्त्र या चांदी का पट्टा या घंटी या मुया अर्पित किया जाता है। जिसे कोला में श्रृंगार हेतु बांध दिया जाता है। इसी दौरान कड़ा के मंडप में उसेंडी देव के आंगा व उनके परिवार के स्थानीय देवी-देवता के कोला का श्रृंगार किया जाता है।





देव परिक्रमा

देवी-देवताओं का शृंगार पूर्ण होने के उपरांत वे पुनः 'कड़ा' स्थल पर नर्तक दलों के साथ आते हैं। इसके बाद पुजारी द्वारा देवी-देवताओं की पूजा किया जाता है व जूलूस तथा देव परिक्रमा कार्यक्रम प्रारंभ होता है। उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) के आंगा व उनके परिवार के देवी-देवताओं के कोला द्वारा 'कड़ा' स्थल पर मंडा व दन्या का 12 परिक्रमा किया जाता है। परिक्रमा के दौरान ढोल-बाजे, अकुम, घंटा के साथ पूरे नर्तक दल, पुजारियों का समूह, स्थानीय जन सभी परिक्रमा में भाग लेते हैं। पूरा माहौल धार्मिक व आस्थामय हो जाता है।

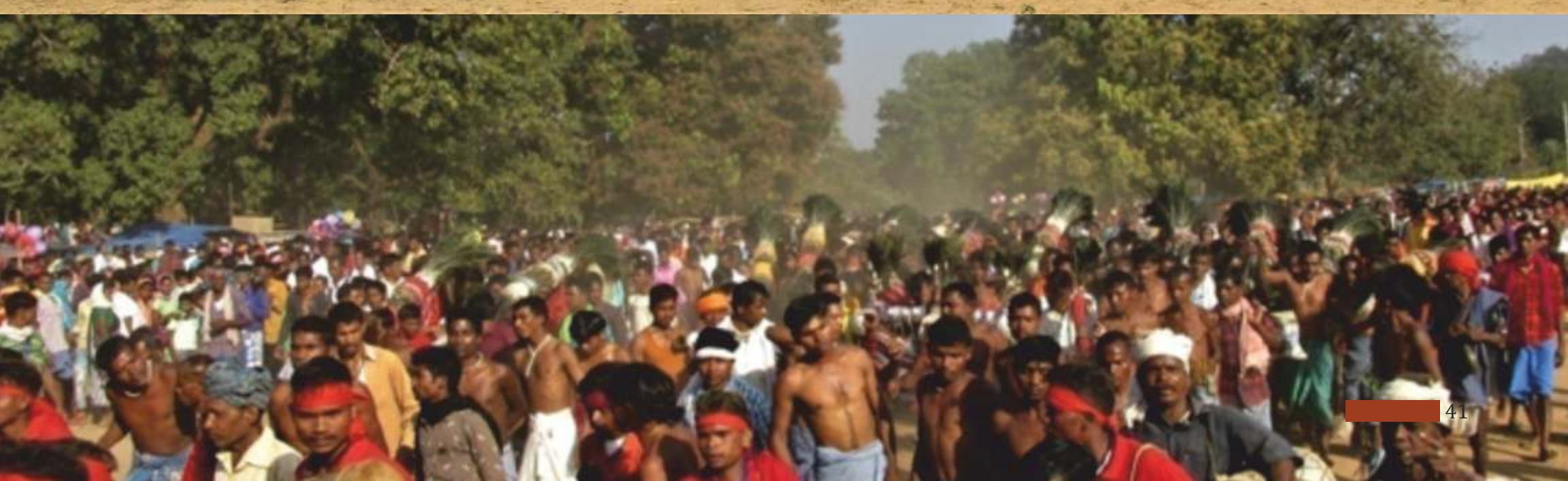
देव परिक्रमा के दौरान अन्य ग्रामों से आये देवी-देवताओं के कोला अपने क्षेत्रवासियों को दर्शन देने के लिये अलग हो जाते हैं। इसी दौरान ग्राम की वृद्ध महिलाओं का दल 'करसाड़ पाटा' (गीत) गाती हैं।

अन्य महिलायें आकर नृत्य करने लगती हैं। इसी समय पुजारी उसेंडी देव (उसेंड मुयतोर) के आंगा को उठाकर महिलाओं के गीत व नृत्य से नाचने लगता है व नृत्यरत महिलाओं के साथ पूजन स्थल का तीन परिक्रमा पूर्ण करता है। यह नृत्य, गीत व देव परिक्रमा का अवसर अद्भुत है। जिस तल्लीनता से महिलायें गीत गाती हैं, नृत्य करती हैं व देव नृत्य करते हैं। यह दृश्य सभी उपस्थित जनों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

मंडई स्थल में दिन भर लोगों का तांता लगा रहता है। जैसे-जैसे दोपहर से शाम होता है, भीड़ बेहद बढ़ जाती है। मंडई स्थल विविध दुकानें, होटल, फल-

सब्जियां, खेल-खिलौने आदि की दुकानें सजी होती हैं। दिन भर के पूजा विधान के पूर्णता उपरांत संध्या में विश्राम का समय होता है जिसमें सभी सदस्य अपने-अपने अपने देवों को पूजन स्थल पर छोड़कर अपने 'बंदरम' (विश्राम स्थल) पर चले जाते हैं। वहां कुछ देर विश्राम व भोजन के पश्चात् पुनः मंडई स्थल पर रात्रि के कार्यक्रम के लिये उपस्थित हो जाते हैं। रात्रि में नानोली वैया नृत्य, माड़िया नृत्य, कीर्तन व नाट का कार्यक्रम आयोजित होता है। यह संध्या आठ बजे से प्रारंभ होकर प्रातः आठ बजे तक किया जाता है। इस प्रकार यह ग्रामवासियों एवं उपस्थित जनों के धार्मिक, सामाजिक, मनोरंजन की दृष्टि से परिपूर्ण अवसर होता है।







देवी देवताओं की विदाई

करसाड़ पर्व के धार्मिक आयोजन, नृत्य व पूरी रात मनोरंजन के पश्चात् बुधवार के दिन बैठक, चर्चा, पूजन एवं विदाई का कार्यक्रम होता है। विभिन्न ग्रामों से आये देवी-देवताओं के पुजारी, वहु, सिरहाव ग्रामीण जन मिलकर चर्चा करते हैं। इस दौरान विभिन्न ग्रामों में देवी-देवताओं से संबंधित समस्याओं, आयोजनों आदि के विषय में विचार-विमर्श किया जाता है। इसके पश्चात् दोपहर में विदाई का कार्यक्रम होता है। जिसमें सभी आमंत्रित देवी-देवताओं, पुजारियों व प्रमुख को विदाई व भेंट स्वरूप घोती, गमछा, नारियल, अगरबत्ती, साड़ी आदि दिया जाता है। पुजारी पूजा कर सभी देवी-देवताओं को कापरी घास अर्पित करता है तथा सभी देवी से संबंधित सदस्यों को देता है। देवी-देवताओं में सर्वप्रथम बिंजाम के हुंगा-वेल्ला की विदाई होती है। उनके पश्चात् कटुलनार की हिरेडोकरी देवी की तत्पश्चात् मसेनार के बोमड़ा देव की, उनके बाद कारली के जागरूंगा देव की, उनके बाद बेलनार के गद बोमड़ा देव की विदाई होती है। अंत में तेरलापाल व कोरलापाल के कुंवर देव, कंडिरे देवी व पाली देवी की विदाई होती है।



सिंगार उताएनी

घोटपाल मंडई, का अंतिम रस्म सिंगार उतारनी रस्म होता है। मंडई समाप्ति के उपरांत उसेंडी देव व अन्य देवी-देवताओं के विग्रह के श्रृंगार उतार कर व शुद्धिकरण कर गर्भगृह में पुनः स्थापित करते हैं। श्रृंगार उतारने व शुद्धिकरण का कार्य रात जाति के सदस्य व अन्य सेवादार करते हैं। इस दिन रात जाति के सदस्य गर्भगृह व देव विग्रहों को साफ-सफाई करते हैं। इसके बाद मंदिर के गर्भगृह में उसेंडी देव व अन्य देव विग्रहों को रात जाति के सदस्य दूध छिड़क कर शुद्धिकरण करते हैं। ऐसा माना जाता है कि मंडई के दौरान विभिन्न लोगों के संपर्क में आने के कारण देवी-देवता अशुद्ध हो जाते हैं। इस कारण मंडई उपरांत देवी-देवताओं का शुद्धिकरण किया जाता है। शुद्धिकरण करने पश्चात् देवी-देवताओं को मंदिर में गर्भगृह में यथास्थान स्थापित करते हैं व पुजारी देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। सिंगार उतारनी के दिन मुर्गा की बलि देते हैं व मन्त्र करते हैं कि ग्राम में व क्षेत्र में किसी को नुकसान न हो व सभी सुरक्षित रहें।

पूजन के उपरांत पुजारी, सेवादार व ग्राम के सदस्य 'कर्ऱे' में जाते हैं। कर्ऱे में पूजा करने के उपरांत मंडई में बलि दिये गये पशु-पक्षी के सिर को आग में भूंजकर सभी प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। इसके बाद कर्ऱे स्थल पर 'गादी रिकानी' के दिन खोदे गये गड़द़ा की मिट्टी को पुनः गड़दे में भरकर पाट दिया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि मंडई पूर्ण हो चुकी है तथा आज दिन से गांव का सदस्य या परिवार मिट्टी से संबंधित कार्य कर सकता है। कर्ऱे में पूजा-विधान व भोजन पूर्ण होने के उपरांत माटी पुजारी को 'अक्कोमामा' वैवाहिक संबंधी गोत्र का सदस्य अपने कंधे में बैठाकर उसके घर तक पहुंचाता है व ग्रामवासी अपने घर जाते हैं। इस प्रकार घोटपाल मंडई कार्यक्रम संपन्न होता है।



व्यवस्था एवं संचालन



घोटपाल मंडई, घोटपाल के मंडई पारा में आयोजित एक सामूहिक आयोजन है। जिसमें ग्राम व क्षेत्र के ग्रामवासियों, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक व जागरूक सदस्यों की सहभागिता होती है। पूर्व में घोटपाल मंडई स्थानीय ग्रामवासियों द्वारा पारंपरिक तरीके से आयोजित किया जाता था किंतु इसकी भव्यता, प्रतिवर्ष बढ़ती प्रसिद्धि व जनसहभागिता को देखते हुये स्थानीय शिक्षित व जागरूक सदस्यों ने इसके व्यवस्थित आयोजन की आवश्यकता महसूस किया। इस हेतु उसेण्डी तादो (देव) मंदिर समिति, घोटपाल का गठन कर समिति द्वारा व्यवस्थित रूप से मंडई का आयोजन व संचालन किया जा रहा है। इस समिति में संरक्षक, संयोजक, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, सह सचिव, कोषाध्यक्ष आदि पदधारित सदस्य हैं। इस आयोजन में जिला प्रशासन का भी सहयोग होता है। बहुत रूप से मनाये जाने

वाले इस मेले में विभिन्न समितियों, निगरानी दल का गठन किया जाता है। समिति व निगरानी दल के सदस्य अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन अत्यंत कुशलता से करते हैं व मंडई के निर्विघ्न संपन्न होने में अपना योगदान देते हैं। समिति के सदस्यों में यह भावना है कि मंडई का सफल आयोजन हो, इस मेले में आने वाले समस्त जन मंडई में भरपूर आनंद प्राप्त करें। उन्हें किसी प्रकार का कष्ट व असुविधा का सामना न करना पड़े। किसी प्रकार की असामाजिक गतिविधियां मंडई परिसर व ग्राम क्षेत्र में घटित न हो क्योंकि अगर ऐसा होता है तो इससे समिति व ग्राम की छबि खराब होगी। इस प्रकार जनसहभागिता व आपसी सामंजस्य से इस मंडई का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2021 में आयोजित घोटपाल मंडई के आयोजन हेतु गठित समिति का विवरण इस प्रकार है।

उसेण्डी तादो (देव) मंदिर समिति, घोटपाल

गोला को सुचारू रूप से संचालन हेतु निगरानी दल व समिति

क्र.	विभाग का नाम	प्रभारी का नाम
1.	महा संचालक निगरानी दल	1 अभिमन्यु सोनी 2 महादेव नेताम 3 बलीराम नेताम 4 सुदरू कड़ती 5 पंचम यादव 6 सुदरू राम भास्कर 7 लक्ष्मण बाबा 8 मासाराम लेकाम 9 नंदलाल राठौर 10 मैतूराम लेंकाम
2.	मंच संचालन लेखा-जोखा	1 रामलाल नेताम 2 सुदरू नेताम 3 उरदो ठाकुर 4 पीलाराम सिन्हा 5 महारू लेकाम 6 संदीप राठौर 7 सुशील नेताम 8 मनीराम मुरामी 9 रमेश कोवासी
3.	मंच व्यवस्था व्ही. आई. पी. एवं प्रदर्शनी विभाग	1 एस.आर. गोटी 2 बिन्दु कश्यप 3 कृष्णा ठाकुर 4 संदीप राठौर 5 पीलाराम सिन्हा 6 मनोज नेताम 7 सुशील नेताम 8 कृष्णा नेताम 9 जगत नेताम 10 अंजू नेताम 11 रवि सेठिया
4.	सुरक्षा प्रभारी एवं निगरानी दल	1 सुधराम भास्कर 2 महादेव नेताम 3 कुम्माराम वेक 4 मैतूराम लेकाम 5 मधुसुदन ठाकुर 6 रमेश कड़ती 7 केशव नेताम 8 पंचम यादव
5.	पार्किंग व्यवस्था	1 मंगलू मरकाम 2 मासोराम लेकाम 3 जयदेव मरकाम 4 कल्लू नेताम 5 बरतू नेताम 6 बिजलू नेताम 7 मोहन सेठिया
6.	दुकान प्रभारी	1 लखमू कश्यप 2 भूत्रे यादव 3 रमेश यादव 4 मनीराम मुरामी 5 लखमा वटटी 6 रवि कश्यप 7 जगत नेताम
7.	मेस प्रभारी	1 पोदिया राम लेकाम 2 मैतूराम लेकाम 3 रमेश कड़ती
8.	स्वास्थ्य प्रभारी	1 मधुसुदन ठाकुर 2 लखन यादव 3 केशव नेताम 4 जयदेव मरकाम 5 सनकू कोवासी 5 शनदेव यादव 6 धनसिंह पवार
9.	पानी व्यवस्था प्रभारी	1 बलीराम नेताम 2 रवि कश्यप 3 लक्ष्मण लेकाम 4 रमेश कड़ती 5 लुदरूराम नाग 6 सुकित सेठिया
10.	भोजन प्रभारी	1 पीलाराम सिन्हा 2 सुशील नेताम 3 मासाराम लेकाम 4 कल्लू नेताम 5 बिजलू नेताम 6 भूत्रे यादव 7 सागर यादव 8 रैयनू सेठिया
11.	सांस्कृतिक एवं नाट प्रभारी	1 सुदराम भास्कर 2 नंदलाल राठौर 3 बिजलू नेताम 4 लुदरू राम नाग 5 मंगलू मरकाम 6 महादेव नेताम 7 लखन यादव
12.	नानों वैया, माड़िया नृत्य, ढोल प्रभारी	1 कुम्माराम वेक 2 जितेन्द्र वेटटी 3 मैतूराम पोयाम 4 अनिल नेताम 5 कल्लू लेकाम 6 लखमा वेटटी 7 बलीराम नेताम



घोटपाल मंडई का आयोजन जन सहयोग से किया जाता है। समिति से प्राप्त जानकारी के अनुसार घोटपाल गांव में कुल 540 परिवार हैं, जिनसे प्रति परिवार 2 सोली या लगभग 1 किलो चांवल तथा 50 रूपये चंदा एकत्र किया जाता है। इस प्रकार 5.40 क्विंटल चांवल तथा 27000 रूपये एकत्र हुआ। इसका उपयोग विभिन्न गांवों से आये देवी-देवताओं के पुजारी व अन्य व्यक्तियों को 'रूसूम' या भोजन के लिये अनाज देने में किया जाता है।

इसी प्रकार विगत तीन वर्षों से जिला प्रशासन द्वारा घोटपाल मंडई के आयोजन हेतु आर्थिक सहायता प्रदान किया जा रहा है। इस वर्ष समिति द्वारा प्रस्तुत मांग पत्र के अनुसार जिला प्रशासन द्वारा 8.90 लाख रूपये प्रदान किया गया। इस राशि का उपयोग देवी-देवता के वस्त्र, शृंगार सामग्री, वस्त्र, पूजन सामग्री, मंदिर पुताई कार्य, भोजन सामग्री, टेंट व लाईट व्यवस्था, साफ-सफाई, पाम्पलेट व फ्लैक्स, पुरस्कार, वाहन व परिवहन आदि में व्यय किया गया।





निष्कर्ष

माड़िया व मुरिया जनजाति का गोत्र देव पर्व करसाड़ अद्भुत है। यह मानव समाज एवं दैवीय समाज के सम्मिलन का अवसर है। जिसमें सगे-संबंधी, ग्रामवासी एक-दूसरे से मिलते हैं वहीं दूसरी ओर गोत्र देव व उनके संबंधी देवी-देवता अपने विग्रह के रूप में पुजारी व सेवकों के साथ एक-दूसरे से मिलते हैं। इस प्रकार माड़िया व मुरिया जनजातीय समाज की यह अनोखी धार्मिक परंपरा समाज व संस्कृति की मौलिकता, अक्षुण्णता व निरंतरता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह माड़िया व मुरिया जनजाति के सगोत्रीय व विगोत्रीय सदस्यों को जोड़ने, आपस में संबद्ध करने का विशेष अवसर है। करसाड़ पर्व, वर्षाकाल के प्रारंभ से कृषि व अन्य आर्थिक क्रियाओं में संलग्न समुदाय को श्रमसाध्य दौर से सुकून, सुख-शांति एवं मनोरंजन प्रदान करने वाला, अपने आराध्य के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का महान पर्व है।

करसाड़ पर्व माड़िया व मुरिया जनजाति समाज के धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है। यह पर्व गत वर्ष में समाज के सदस्यों की सुरक्षा, संरक्षण व खुशहाली के लिये देव-देवियों के प्रति आभार से प्रारंभ होकर आगामी वर्ष में अच्छी फसल, सुरक्षित जीवन, अनहोनी से बचाव की अपेक्षा के साथ पूर्ण होता है। निश्चित पूजा विधान, आगाध शृद्धा से परिपूर्ण यह पर्व सामाजिक एकता व बंधुत्व की भावना को मजबूत करता है। यह आदिम समाज में व्यक्ति की समाज पर निर्भरता व उसके महत्व को रेखांकित करता है कि समाज में सामूहिकता ही सर्वोपरि है तथा इसी सामूहिकता में ही उसका जीवन आधारित है।

करसाड़ पर्व माड़िया व मुरिया जनजाति में समाजीकरण व संस्कृति हस्तांतरण का श्रेष्ठ माध्यम है। अपनी माँ की गोद में दुधमुंहे बच्चे, अपने पिता की उंगुलियों को थामें छोटे-छोटे बच्चे जीवन के प्रारंभिक काल से ही इन

आयोजनों का हिस्सा बनते हैं। यही बच्चे किशोरावस्था में ढोल व अकुम लिये नृत्य करते हैं, युवावस्था में अपनी संगिनी के साथ करसाड़ में सहभागिता व शेष जीवन में अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं। इस प्रकार बचपन से ही अपनी संस्कृति को जीते हुये सीखते हैं। यह समाज में नये सदस्य के समाजीकरण की विधितथा संस्कृति हस्तांतरण की स्वाभाविक प्रक्रिया है।

करसाड़ पर्व धार्मिक आयोजन होने के साथ-साथ इसमें आपसी मेल-मिलाप, सामूहिकता व मनोरंजन का संगम है, इसमें खुशी, मनोरंजन व उत्तरदायित्व का समावेश है। इसके आयोजन की प्रारंभिक चर्चा व तिथि निर्धारण से ही जनमानस में उत्साह का संचार होने लगता है और इसके आयोजन के दौरान यह उत्साह, खुशी, उत्साह अपने चरम पर होता है। यह अपने मित्रों, सगे-संबंधियों, अतिथियों के आदर-सत्कार, सुख-दुख बांटने का अवसर होता है।

करसाड़ पर्व का धार्मिक के साथ-साथ सामाजिक पक्ष भी अत्यंत सशक्त है। इसमें सगोत्रीय जन व वैवाहिक गोत्र के सदस्य भी उपस्थित होते हैं। व्यक्ति का सामाजिक जीवन उक्त दोनों प्रकार के संबंधियों जुड़ा होता है। लेकामी गोत्र व उनके ददालतमुर व अक्कोमामा पक्ष माड़िया जनजातीय समाज में अन्तर्संबंधित हैं। सामाजिक, धार्मिक, वैवाहिक, मृत्यु संस्कार में दोनों पक्ष एक-दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं। करसाड़ पर्व में दोनों पक्ष मिलकर अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं।

ऐसे अवसर युवक-युवतियों के आपसी मेल मिलाप का माध्यम होते हैं। जिसमें मंडई स्थल पर अनेक गांव के युवक-युवतियों का नर्तक दल आकर अपने नृत्य का प्रदर्शन करता है। नृत्य की वेशभूषा व शृंगार में सजे कई युवक-

युवती एक-दूसरे की ओर आकर्षित होकर प्रेम संबंध में बंध जाते हैं, ऐसे कई जोड़े भविष्य में विवाह बंधन में बंध जाते हैं।

दंतेवाड़ा ज़िले के प्रथम मंड़ई के रूप में विरच्यात घोटपाल मंड़ई में दूरस्थ क्षेत्र के ग्रामीणों की सहभागिता व अपार जनसमुदाय की उपस्थिति के कारण दंतेवाड़ा ज़िला प्रशासन द्वारा मंड़ई के आयोजन में सहयोग किया जाता है। इस अवसर पर विभिन्न विभागों द्वारा अपनी योजनाओं का प्रचार प्रसार, जागरूकता, चिकित्सा उपचार, जानकारी हेतु विभागीय प्रदर्शनी के स्टॉल लगाये जाते हैं। जिसका अवलोकन व जानकारी प्राप्त कर ग्रामीण जन अपनी जिज्ञासा पूर्ति करते हैं।

इस प्रकार धार्मिक उद्देश्यों के पूर्ति के लिये मनाये जाने वाले घोटपाल मंड़ई में अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष का समावेश होता है। यह क्षेत्र के लोगों के आपसी संबंध को मजबूती प्रदान करता है। लोगों के कष्ट, दुख, शंका-अनिष्ट भय का समाधान अपने ईष्ट देव से प्राप्त होता है। यह लोगों के जीवन के एकरसता को समाप्त कर खुशियों का संचार करता है। यह समाज की मानसिक-सामाजिक-सांस्कृतिक एकता को बनाये रखने के साथ-साथ पुरुखों की इस परंपरा के निर्वहन व अगली पीढ़ी को परंपरा हस्तांतरण का अवसर प्रदान करता है। जिससे यह परंपरा सतत व संपूर्णता के साथ सदियों तक जीवित रह सके।





परिवर्तन

घोटपाल मंडई पारंपरिक रूप से कई पीढ़ियों से निरंतर जारी है। इस आयोजन का मूल भाव व धार्मिक अनुष्ठान के रीतियाँ व परंपरायें यथावत् या अल्प परिवर्तन सहित अक्षण्ण हैं किंतु समय व परिस्थिति वश इस आयोजन के भौतिक स्वरूप में परिवर्तन हुये हैं। इस आयोजन को भव्यता, जन सहभागिता को देखते हुये मनोरंजन, जागरूकता व संबद्धता को बनाये रखने के लिये अनेक नये कार्यक्रम जुड़ गये हैं, जिससे घोटपाल मंडई में परिवर्तन हुआ है। इसके साथ ही कुछ समस्यायें हैं जिनका निराकरण कर इस आयोजन को अधिक भव्यता प्रदान किया जा सकता है। परिवर्तन का विवरण निम्नांकित है-

1. घोटपाल मंडई के मुख्य आयोजन के दौरान रात्रि में पारंपरिक नृत्य किया जाता है। जिसमें विभिन्न ग्रामों से आये हुये सदस्य भाग लेते हैं। वर्तमान में इस आयोजन में नाट, कीर्तन आदि नये सांस्कृतिक कार्यक्रमों का समावेश हुआ है।
2. घोटपाल मंडई में भारी भीड़ के कारण स्थानीय व्यवसायी मनीहारी, सब्जी, दैनिक उपयोगी वस्तुओं, होटल, खिलौने आदि की दुकान

लगाने लगे हैं।

3. घोटपाल मंडई के आयोजन के स्वरूप में परिवर्तन आया है, पूर्व में ग्राम प्रमुख, पुजारी व ग्रामीण ही इस आयोजन का भाग होते थे किंतु वर्तमान में घोटपाल मंडई के आयोजन के स्वरूप में परिवर्तन आया है, वर्तमान में मंदिर समिति व उपसमितियों का गठन कर व्यवस्थित रूप से इस घोटपाल मंडई का आयोजन किया जाता है। वर्तमान में इस आयोजन में जिला प्रशासन, क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि की भूमिका महत्वपूर्ण हो गयी है।
4. घोटपाल मंडई में आधुनिक साधनों के कारण प्रचार-प्रसार के तरीके में परिवर्तन हुआ है। वर्तमान में घोटपाल मंडई के आयोजन के प्रचार-प्रसार हेतु पारंपरिक तरीकों के अलावा जिला के सभी मुख्य नगरों में बड़े-बड़े फ्लैक्स, बैनर लगाया जाता है। इसी प्रकार इंटरनेट पर सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाने लगा है।





समर्पण

1. घोटपाल मंडई के विभिन्न रस्मों व कार्यक्रमों का आयोजन सत्रह दिनों तक होता है। जिसमें अनेक कार्यक्रम रात्रिकालीन होते हैं। जिसमें ग्रामीणों की भारी भीड़ होती है। घोटपाल मंडई के रात्रिकालीन कार्यक्रमों में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था का अभाव है, जिससे अनेक असुविधा का सामना करना पड़ता है।
 2. आयोजन स्थल पर विभिन्न ग्रामों से आने वाले देवी-देवताओं के विग्रह, पुजारी, सेवादार तथा ग्रामीणों को विश्राम हेतु मैदान में वृक्ष के नीचे स्थान दिया जाता है। जिससे ग्रामीणों को असुविधा का सामना करना पड़ता है।
 3. घोटपाल मंडई, दंतेवाड़ा क्षेत्र में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली सर्वप्रथम मंडई है, इसके बाद ही दूसरे गांवों में मंडई का आयोजन किया जाता है। इस कारण इस मंडई में व्यापक जनभागीदारी होती है। समिति द्वारा भीड़ के प्रबंधन एवं जन सुरक्षा हेतु स्थानीय युवाओं की समिति बनायी जाती है किंतु यह अपर्याप्त है।
 4. घोटपाल मंडई में अधोसंरचनात्मक सुधार आवश्यक है। जैसे- गांव से मंडई स्थल पहुंच मार्ग, मंडई स्थल से देव स्नान तालाब का मार्ग कच्चा है, जिसमें आने-जाने में असुविधा होती है। इन मार्गों पर सीमेंट-कांक्रीट रोड बनाया जा सकता है। देव स्नान के तालाब में गहरीकरण, घाट निर्माण, चारों ओर मेड़ निर्माण व सौंदर्यीकरण एवं मेला स्थल में सौंदर्यीकरण कार्य कराया जाना आवश्यक है।
 5. वर्तमान में घोटपाल मंडई के आयोजन का स्वरूप विस्तृत हो रहा है। इसे भव्य स्वरूप देने के लिये आयोजन समिति प्रयासरत है। इस लिये नये देवगुड़ी का निर्माण किया जा रहा है। मंडई के व्यवस्थित आयोजन व्यय में वृद्धि हो रही है किंतु पर्याप्त आय व चंदा न होने के कारण आयोजन समिति को आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ता है।
 6. पूर्व में घोटपाल मंडई में सहभागिता हेतु कई दिनों पूर्व दूसरे ग्राम के ग्रामीण अपने संबंधी के घर में आकर रुकते थे वर्तमान में मंडई के दिन या एक दिन पूर्व ही आयोजन में सहभागिता हेतु आते हैं। नई पीढ़ी की धार्मिक कार्यक्रमों में सहभागिता में कमी आ रही है। वे मनोरंजन या नृत्य के कार्यक्रमों में सहभागिता व रूचि दिखाते हैं।



सुझाव

1. घोटपाल मंड़ई अंतर्गत सभी आयोजन स्थल का व्यवस्थित रूप से रखरखाव, सफाई व व्यवस्थापन हो।
2. मुख्य आयोजन स्थल के चारों ओर व्यवस्थित सुरक्षा धेरा लगाया जाय जिससे कार्यक्रम के दौरान अव्यवस्थान हो।
3. घोटपाल मंड़ई के मुख्य आयोजन में दौरान रात्रि के समय में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जिसमें बड़ी संख्या में ग्रामीणों की उपस्थिति होती है। इस दौरान सुरक्षा हेतु व्यापक प्रबंध किया जाना आवश्यक है।
4. आयोजन स्थल पर विभिन्न ग्रामों से आने वाले देवी-देवताओं के विग्रह, पुजारी, सेवादार तथा ग्रामीणों के विश्राम हेतु सामुदायिक भवन का निर्माण किया जाना उचित होगा।
5. मुख्य आयोजन स्थल के चारों ओर दर्शकों के बैठने हेतु गैलरी का निर्माण किया जाना उचित होगा। देव स्नान के तालाब में गहरीकरण, घाट निर्माण, चारों ओर मेड़ निर्माण व सौंदर्यीकरण एवं सीमेंट-कांक्रीट रोड (सी.सी.रोड) कार्य कराया जाना उचित होगा।
6. घोटपाल मंड़ई के आयोजन दिवस में जिला मुख्यालय से घोटपाल ग्राम तक आवागमन हेतु मिनी बस या अन्य सार्वजनिक परिवहन सेवा प्रारंभ किया जाय। जिससे अधिकाधिक स्थानीय निवासी व पर्यटक घोटपाल मंड़ई में शामिल हो सकें।
7. घोटपाल मंड़ई व ऐसे ही अन्य मंड़ई मेलों की सूची व आयोजन की तिथियां व संक्षिप्त विवरण छत्तीसगढ़ राज्य पर्यटन विभाग व जिला प्रशासन के वेबसाईट में प्रदर्शित कर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है, जिससे इथनिक टूरिज्म को बढ़ावा मिलेगा। देशी-विदेशी पर्यटक इन गौरवपूर्ण धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजन में शामिल होकर जनजातीय संस्कृति का जीवंत दर्शन कर सकेंगे।







संचालनालय, आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
सेक्टर 24, नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़

Website: cgtrti.gov.in, E-mail: trti.cg@nic.in

Phone: 0771-2960530, Fax: 0771-2960531